PRGI No. UPHIN/25/A1698

नवसर्जन संस्कृति

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM LUCKNOW

वर्ष : 02
अंक : 014
दि. 14.05.2026, गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

नोएडा-गाजियाबाद में वर्क फ्रॉम होम होगा लागू! मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का बड़ा आदेश

पीएम मोदी की अपील के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राज्य में बढ़ती ऊर्जा खपत और ट्रैफिक जाम से निपटने के लिए एक बड़ा मास्टर प्लान तैयार किया है.

(जीएनएस)।

उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार राज्य के कार्यक्षेत्र और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक क्रांतिकारी बदलाव लाने जा रही है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा ईंधन की बचत और ऊर्जा संरक्षण के वैश्विक आ'ान के बाद, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में हफ्ते में दो दिन वर्क फ्रॉम होम (WFH) की व्यवस्था लागू करने की दिशा में कदम बढ़ा दिए हैं.

किन पर लागू होगा यह नियम?

सरकार का यह कदम न केवल बढ़ते ट्रैफिक और प्रदूषण को कम करने के लिए है, बल्कि यह भविष्य की स्मार्ट वर्किंग संस्कृति को भी बढ़ावा देगा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्चस्तरीय बैठक की थी. इस बैठक में तय किया गया कि सरकार जल्द ही उन निजी और कॉर्पोरेट संस्थानों के लिए एक एडवाइजरी जारी करेगी, जहां कर्मचारियों की संख्या अधिक है.

सरकार का प्राथमिक फोकस इन क्षेत्रों पर

आईटी सेक्टर और स्टार्टअप्स- इन क्षेत्रों में कार्य की प्रकृति डिजिटल होने के कारण इन्हें प्राथमिकता दी जाएगी. बड़ी निजी कंपनियां और कॉर्पोरेट ऑफिस- यहां बड़ी संख्या में कर्मचारियों के आवागमन से ट्रैफिक पर दबाव बढ़ता है. औद्योगिक इकाइयां- जहां प्रशासनिक कार्य घर से संभव हैं, वहां भी इसे लागू करने की सलाह दी जाएगी.

सड़कों पर वाहनों का बोझ होगा कम

सरकार का मानना है कि यदि बड़ी कंपनियां सप्ताह में दो दिन घर से काम की सुविधा देती हैं, तो सड़कों पर निजी वाहनों का बोझ कम होगा।

जिससे ईंधन की खपत में भारी गिरावट आएगी और पर्यावरण को भी लाभ मिलेगा.

सरकारी तंत्र और बैठकों में डिजिटल बदलाव

मुख्यमंत्री ने केवल निजी क्षेत्र ही नहीं, बल्कि सरकारी विभागों के लिए

भी कड़े निर्देश जारी किए हैं. उन्होंने आदेश दिया है कि सरकारी विभागों की कम से कम 50 प्रतिशत आंतरिक बैठकें ऑनलाइन माध्यम से की जाएं. बड़े सेमिनार, कॉन्फ्रेंस और कार्यशालाओं को भी अब वर्चुअल मोड में आयोजित करने को प्राथमिकता दी जाएगी. स्कूलों और कॉलेजों को भी अपनी प्रशासनिक बैठकों के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करने के निर्देश दिए गए हैं.

पब्लिक ट्रांसपोर्ट और नो व्हीकल डे की अपील

ईंधन की बचत के लिए सीएम योगी ने लीड बाय एग्जांपल (उदाहरण पेश कर नेतृत्व करना) की नीति अपनाई है. उन्होंने मंत्रियों, सांसदों और विधायकों से अपील की है कि वे सप्ताह में कम से कम एक दिन निजी या सरकारी वाहनों का त्याग कर पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करें.

मेट्रो और कार पूलिंग

जिन शहरों में मेट्रो उपलब्ध है, वहां जनता को निजी वाहनों के बजाय मेट्रो चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा. साथ ही कार पूलिंग को भी बढ़ावा देने की बात कही गई है. सरकार प्रदेश में सप्ताह में एक दिन नो व्हीकल डे मनाने का सुझाव दे रही है, ताकि आम नागरिक भी इस राष्ट्रीय बचत अभियान का हिस्सा बन सकें.

पूरी तरह बदल जाएगा राज्य का वर्क कल्चर

उत्तर प्रदेश में यदि यह योजना पूर्ण रूप से लागू होती है, तो यह राज्य के वर्क कल्चर को पूरी तरह बदल देगी. यह न केवल कर्मचारियों को लंबे सफर की थकान से बचाएगा, बल्कि प्रदेश को एक हरित और डिजिटल भविष्य की ओर ले जाएगा.

तेल बचाने के लिए पीएम मोदी ने पेश की मिसाल, केवल 2 गाड़ियों के साथ निकला काफिला

(जीएनएस)।

पश्चिम एशिया में जारी युद्ध और वैश्विक अस्थिरता के बीच, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए "आर्थिक देशभक्ति" का मंत्र दिया है। हाल ही में अपने संबोधन में पीएम मोदी ने नागरिकों से एक साल तक सोना न खरीदने और ईंधन की बचत करने जैसी 7 महत्वपूर्ण अपीलें की थीं।

अब इस मुहिम में खुद उदाहरण पेश करते हुए, प्रधान मंत्री ने अपने आधिकारिक काफिले के आकार में दो गाड़ियों की कटौती कर इसे छोटा कर दिया है। रढक्ष् प्रोटोकॉल और सुरक्षा मानकों को बरकरार रखते हुए लिया गया यह निर्णय नेतृत्व की उस मिसाल को दशार्ता है, जहां शासन स्वयं त्याग कर जनता को प्रेरित कर रहा है।

ईंधन संरक्षण: नेतृत्व का अनुकरणीय उदाहरण

प्रधान मंत्री द्वारा अपने काफिले में की गई यह कटौती केवल प्रतीकात्मक नहीं, बल्कि एक गहरा संदेश है। पश्चिम एशिया संकट के कारण कच्चे तेल की वैश्विक आपूर्ति बाधित हुई है, जिससे भारत के विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव बढ़ा है। पीएम मोदी ने स्पष्ट किया है कि जब देश संकट से जूझ रहा हो, तो सरकारी तंत्र को भी मितव्ययिता अपनानी चाहिए। काफिले से गाड़ियों को हटाकर उन्होंने यह सिद्ध किया है कि सुरक्षा और प्रोटोकॉल के बीच भी संसाधनों का अनुकूलन संभव है। उनके इस कदम

के बाद अब गृह मंत्री अमित शाह और कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने भी अपने काफिले छोटे करने की घोषणा की है।

सुरक्षा और सादगी के बीच सटीक संतुलन

काफिले के आकार में कमी का निर्णय अत्यंत संवेदनशीलता के साथ लिया गया है।

विशेषज्ञों के अनुसार, रढक्ष् (विशेष सुरक्षा समूह) ने पीएम की सुरक्षा के आवश्यक तकनीकी और सामरिक घटकों से समझौता किए बिना इस योजना को लागू किया है। यह बदलाव दशार्ता है कि आधुनिक सुरक्षा तकनीकों का उपयोग कर कम वाहनों के साथ भी सुरक्षा घेरे को अभेद्य रखा जा सकता है। प्रधान मंत्री का यह 'लीड बाई एग्जांपल' दृष्टिकोण जनता को यह विश्वास दिलाता है कि ईंधन बचाने और आयातित वस्तुओं पर निर्भरता कम करने की उनकी अपील राष्ट्रहित में है और इसकी शुरूआत स्वयं सत्ता के शीर्ष से हो चुकी है।

पीएम मोदी ने रखा'आर्थिक देशभक्ति' का रोडमैप

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कुछ दिन पहले हैदराबाद में अपने संबोधन के दौरान देशवासियों के सामने 'आर्थिक देशभक्ति' का एक रोडमैप रखा। उन्होंने स्पष्ट किया कि वैश्विक संघर्षों और सप्लाई चेन में बाधाओं के कारण बढ़ती महंगाई से लड़ने के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी हैं। पीएम ने नागरिकों से अपील की कि वे आगामी एक वर्ष तक सोना खरीदने से बचें और ईंधन की बचत को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाएं। यह आ'ान केवल जनता तक सीमित नहीं है, बल्कि सरकार के विभिन्न मंत्रालयों ने भी अब अपने खर्चों में भारी कटौती करने की तैयारी शुरू कर दी है।

विभिन्न मंत्रालयों पर भी लागू होगा नियम

पीएम मोदी की अपील के बाद केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों ने अपने दैनिक परिचालन खर्चों में कटौती का मन बना लिया है। इसके तहत सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को निजी वाहनों के बजाय मेट्रो और सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। साथ ही, कार्यालयों में 'कार पूलिंग' को बढ़ावा दिया जाएगा ताकि ईंधन की खपत कम हो सके। विभाग अब फिजूलखर्ची रोकने के लिए बड़े और भव्य आयोजनों के बजाय सादगीपूर्ण बैठकों पर जोर दे रहे हैं।

सोनिया गांधी फिर अस्पताल में एडमिट! क्या है परेशानी? अब कैसी है तबीयत

कांग्रेस संसदीय दल की चेयरपर्सन सोनिया गांधी को मंगलवार देर रात गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल

में भर्ती कराया गया। अस्पताल की ओर से जारी जानकारी के मुताबिक, सोनिया गांधी को रात 10:22 बजे एडमिट किया गया और उनकी हालत फिलहाल स्थिर बताई जा रही है। डॉक्टर उनकी जांच कर रहे हैं और उन्हें एक मामूली मेडिकल प्रक्रिया से गुजरना है।

सूत्रों के मुताबिक, डॉक्टर पेट और यूरिनरी ट्रैक्ट में संभावित संक्रमण की भी जांच कर रहे हैं।

अजित पवार का विमान जहां हुआ था क्रैश, वहीं ट्रेनिंग एयरक्राफ्ट हुआ दुर्घटनाग्रस्त, कैसे हुआ हादसा?

(जीएनएस)।

पुणे के बारामती में बुधवार की सुबह रेडबर्ड एविएशन एकेडमी का एक ट्रेनिंग एयरक्राफ्ट तकनीकी खराबी के चलते दुर्घटनाग्रस्त हो गया। गनीमत यह रही कि इस हादसे में ट्रेनी पायलट की जान बच गई लेकिन गंभीर चोटें आई हैं। विमान भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया है। ये वो ही जगह है जहां पर कुछ महीने पहले महाराष्ट्र के तत्कालीन उपमुख्यमंत्री अजित पवार के प्लेन क्रैश हुआ था जिसमें उनका निधन हो गया था।

पुलिस अधीक्षक गिल ने बताया कि जब विमान में तकनीकी समस्या आई, तो पायलट ने इमरजेंसी लैंडिंग की कोशिश की। जमीन के करीब आते समय विमान का एक पंख बिजली के खंभे से टकरा गया, जिससे विमान अपना संतुलन खो बैठा और जोर से जमीन पर आ गिरा। विमान को काफी नुकसान पहुंचा है, लेकिन जान-माल की कोई बड़ी हानि नहीं हुई। बारामती हवाई अड्डे के निदेशक शिवाजी तावरे ने भी पुष्टि की है कि फिलहाल हादसे के सटीक कारणों की जांच की जा रही है।

अजित पवार के प्लेन क्रैश के जख्म हुए ताजा

यह घटना उसी क्षेत्र में हुई है जिसने कुछ महीने पहले एक बहुत बड़ा दुखद हादसा देखा था। 28 जनवरी को मुंबई से बारामती जा रहा एक प्राइवेट जेट (VT-SSK) दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसमें तत्कालीन उपमुख्यमंत्री अजित पवार और चार अन्य लोगों की दुखद मृत्यु हो गई थी। आज के हादसे ने एक बार फिर उस पुराने जख्म को ताजा कर दिया है। उस मामले की जांच अभी भी नागरिक उड्डयन मंत्रालय का जांच ब्यूरो (AAIB) और महाराष्ट्र सीआईडी मिलकर कर रहे हैं।

'हिंदू बने रहने के लिए..': सुप्रीम कोर्ट ने बताया हिंदू कैसे साबित कर सकता है अपनी धार्मिक आस्था

(जीएनएस)।

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कहा कि हिंदू धर्म जीवन जीने का एक तरीका है, जहां इसमें आस्था रखने वालों के लिए मंदिर जाना अनिवार्य नहीं है। भारत के चीफ जस्टिस सूर्यकांत की अगुवाई वाली 9 जजों की संवैधानिक बेंच में यहां तक कहा गया कि हिंदू धर्म में आस्था होने के लिए अपनी झोपड़ी में दीपक जलाना भी काफी है।

सुप्रीम कोर्ट में 9 जजों की संविधान पीठ केरल के सबरीमाला मंदिर समेत अन्य धार्मिक स्थानों में महिलाओं के साथ भेदभाव से जुड़ी याचिकाओं पर सुनवाई हो रही है। इसी के साथ यह बेंच दाऊदी बोहरा और अन्य संप्रदायों द्वारा पालन की जाने वाली धार्मिक आजादी के दायरे पर भी सुनवाई कर रही है।

सुप्रीम कोर्ट में सवाल हिंदू कौन है

बुधवार को इस मामले की सुनवाई का 15वां दिन था। पीटीआई की एक रिपोर्ट के अनुसार इस दौरान याचिकाकर्ता के एक वकील डॉ जी मोहन गोपाल ने यह कहकर अपना पक्ष रखा कि धार्मिक समुदायों के भीतर से ही सामाजिक न्याय की मांग उभर रही है। उन्होंने कहा, 'हिंदू धर्म को एक धार्मिक श्रेणी के रूप में परिभाषित किया गया था। उसके बाद 1966 में यह पाया गया कि हिंदू वह है, जो सभी धार्मिक और दार्शनिक मामलों में वेदों की सर्वोच्चता स्वीकार करता है। उन्होंने हमसे नहीं पूछा। हम में से किसी ने कभी ऐसा नहीं कहा।'

'हिंदू बने रहने के लिए मंदिर जाना जरूरी नहीं'

उन्होंने सवाल करते हुए कहा, 'अब मेरे मन में वेदों के प्रति सर्वोच्च सम्मान और गहरी आस्था है। लेकिन,क्या यह सच है कि आज हर व्यक्ति जिसे हिंदू माना गया है, वेदों की सर्वोच्च सत्ता को सभी आध्यात्मिक और दार्शनिक मामलों में स्वीकार करता है?' इसपर जस्टिस बीवी नागरत्ना ने जवाब में कहा-

इसी कारण हिंदू धर्म को जीवन जीने का एक तरीका कहा जाता है। एक हिंदू के लिए यह अनिवार्य नहीं है कि मंदिर जाए या हिंदू बने रहने के लिए कोई अनुष्ठान करे। - जस्टिस बीवी नागरत्ना, सुप्रीम कोर्ट

'झोपड़ी के अंदर दीपक जलाना भी पर्याप्त'

जस्टिस नागरत्ना ने यहां तक कहा कि किसी को भी कर्मकांडी होने की जरूरत नहीं है और न ही कोई किसी की आस्था के बीच में आ सकता है। इसकी और खुली व्याख्या करते हुए सीजेआई सूर्यकांत ने कहा-

अगर एक व्यक्ति अपनी झोपड़ी के अंदर एक दीपक भी जलाता है तो यह उसे अपना धर्म साबित करने के लिए पर्याप्त है। - सीजेआई सूर्यकांत

सुप्रीम कोर्ट पहले भी जता चुका है अपनी आपत्ति

इससे पहले सुप्रीम कोर्ट यह तक कह चुका है कि अगर लोग संवैधानिक अदालत में धर्म से जुड़े मामलों या प्रत्येक धार्मिक रिवाजों पर सवाल करना शुरू कर दंगे तो सैकड़ों याचिकाएं आ जाएंगी और इसकी वजह से हर धर्म टूट जाएगा।

सबरीमाला मंदिर केस की सुनवाई कर रहे जज

केरल के सबरीमाला मंदिर केस में सीजेआई सूर्यकांत की अगुवाई वाली सुप्रीम कोर्ट की 9 सदस्यीय इस संवैधानिक बेंच में उनके समेत-

सीजेआई सूर्यकांत
जस्टिस बीवी नागरत्ना
जस्टिस एमएम सुंद्रेश
जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह
जस्टिस अरविंद कुमार
जस्टिस एजी मसीह
जस्टिस प्रसन्ना बी वराले
जस्टिस आर महादेवन
जस्टिस जॉयमाल्या बागची

विभाग बंटवारे की बन गई लिस्ट? मंत्रिमंडल विस्तार के बाद सभी मंत्रियों के साथ आज पहली बैठक करेंगे सीएम योगी

(जीएनएस)।

लखनऊ। रविवार को मंत्रिमंडल विस्तार के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को सभी मंत्रियों की पहली बैठक बुलाई है। मुख्यमंत्री के सरकारी आवास पांच कालिदास मार्ग में शाम पांच बजे से होने वाली बैठक वैश्विक परिस्थितियों और प्रशासनिक प्राथमिकताओं के लिहाज से काफी अहम मानी जा रही है। माना जा रहा है कि बुधवार को ही मंत्रियों के विभागों का बंटवारा भी हो सकता है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आ'ान के बाद योगी ने मंगलवार को खुद के साथ ही मंत्रियों के काफिलों में वाहनों की संख्या आधी करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने ईंधन की खपत घटाने व पीएनजी, मेट्रो, पब्लिक ट्रांसपोर्ट आदि के उपयोग पर भी विशेष जोर देने की अपील की है।

सरकारी बैठकें व कान्फ्रेंस भी वर्चुअली करने को कहा है। उम्मीद की जा रही है कि मुख्यमंत्री बैठक में मंत्रियों से भी इनका कड़ाई से पालन करने के निर्देश देंगे। सरकार इसे सादगी, संसाधनों के बेहतर उपयोग और वर्तमान परिस्थितियों में जिम्मेदार प्रशासनिक संदेश के तौर पर देख रही है।

'नार्मल नहीं है प्रतीक यादव की मौत', सपा विधायक ने उठाए सवाल, कहा-बॉडी पर थे निशान

उत्तर प्रदेश के सियासी गलियारों में आज सुबह से उथल-पुथल मची है, वजह है प्रतीक यादव, आपको बता दें कि भाजपा नेता अपर्णा यादव के पति और सपा प्रमुख अखिलेश यादव के सौतेले भाई की बुधवार को मौत हो गई, हर कोई प्रतीक के अकस्मात निधन से सदमे में है, सबके मन मे 'यही सवाल चल रहा है कि 38 साल के प्रतीक की मौत कैसे हुई?

तो वहीं समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ विधायक रविदास महरोत्रा ने इस मामले पर गंभीर शंका जताते हुए रिटायर्ड जज से जांच कराने की मांग की है। मीडिया से बात करते हुए रविदास महरोत्रा ने कहा कि 'प्रतीक यादव की मौत सामान्य नहीं लग रही है, लोगों के बीच चर्चा है कि शव पर चोट के निशान मौजूद थे।'

सस्ता तेल : रूस ने अमेरिका को ठेंगा दिखाकर कर दिया बड़ा ऐलान कहा दबाव के बावजूद रूस भारत को तेल की सप्लाई जारी रखेगा

(जीएनएस)।

रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने अपनी भारत यात्रा से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत-रूस की गहरी दोस्ती की जमकर प्रशंसा की है। उन्होंने पीएम मोदी को दुनिया के सबसे ऊजार्वान नेताओं में से एक बताया और भारत की सांस्कृतिक विरासत की सराहना की।

लावरोव ने स्पष्ट किया कि पश्चिमी देशों के दबाव के बावजूद रूस भारत को तेल की सप्लाई जारी रखेगा और दोनों देशों के रिश्तों में कोई कमी नहीं आने देगा। उनके इस बयान ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत और रूस के अटूट विश्वास को एक बार फिर दुनिया के सामने मजबूती से रखा है।

लावरोव ने पीएम मोदी के नेतृत्व क्षमता को दुनिया के लिए एक मिसाल बताया। उन्होंने कहा कि मोदी न केवल एक ऊजार्वान नेता हैं, बल्कि वे अपनी इस ऊर्जा का सही इस्तेमाल देश की अर्थव्यवस्था और रक्षा क्षेत्र को मजबूत करने में करते हैं। लावरोव के अनुसार, भारत की सभ्यता और संस्कृति को बचाए रखने का जो काम मोदी ने किया है, वह अतुलनीय है। उन्होंने माना कि मोदी का विजन भारत को एक नई ऊंचाई पर ले जा रहा है।

तेल की सप्लाई और ऊर्जा सुरक्षा का वादा

भारत द्वारा रूस से कम तेल खरीदने की खबरों पर लावरोव ने स्थिति साफ की। उन्होंने कहा कि भारत के साथ तेल व्यापार में जो भी दिक्कतें आई हैं, वे अमेरिका के गलत फैसलों के कारण हैं। रूस ने भरोसा दिलाया है कि वह भारत की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। पश्चिमी देशों की पाबंदियों का असर भारत पर नहीं पड़ने दिया जाएगा और रूस लगातार भारत को तेल निर्यात करता रहेगा ताकि भारत की अर्थव्यवस्था स्थिर रहे।

भारत-रूस दोस्ती में बाहरी दखल का जवाब

कुछ देशों द्वारा रूस और भारत के संबंधों को कमजोर करने की कोशिशों पर लावरोव ने कड़ा रुख अपनाया। उन्होंने कहा कि जो लोग हमारी दोस्ती के भविष्य को लेकर डरे हुए हैं, उन्हें चिंता करने की जरूरत नहीं है। कई वैश्विक शक्तियां हमारे बीच दरार पैदा करना चाहती हैं, लेकिन उनके ये प्रयास कभी सफल नहीं होंगे। भारत और रूस के बीच का भरोसा बहुत पुराना और गहरा है, जिसे कोई भी बाहरी ताकत हिला नहीं सकती।

रक्षा और टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में पुराना साथ

लावरोव ने याद दिलाया कि आजादी के बाद जब पश्चिमी देशों ने भारत की सैन्य मदद करने से मना कर दिया था, तब केवल रूस ही आगे आया था। रूस ने न केवल भारत को आधुनिक हथियार दिए, बल्कि अपनी टेक्नोलॉजी भी साझा की ताकि भारत अपने देश में हथियार बना सके।

ब्राह्मणों को कहा वैश्या, फिर मांगी माफी! भाजपा को पेनल्टी कॉर्नर दे रहे समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता राजकुमार भाटी

(जीएनएस)।

उत्तर प्रदेश की राजनीति में एक बार फिर बयानबाजी को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। समाजवादी पार्टी (SP) के प्रवक्ता राजकुमार भाटी के एक कथित बयान ने राजनीतिक माहौल गर्मा दिया है।

ब्राह्मण समुदाय को लेकर की गई टिप्पणी पर भारतीय जनता पार्टी (BJP) ने सपा को घेर लिया है, वहीं कांग्रेस ने भी इस बयान की कड़ी निंदा की है। मामला इतना बढ़ गया कि उत्तर प्रदेश पुलिस ने मंगलवार, 12 मई को राजकुमार भाटी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि चुनावी साल में इस तरह का विवाद समाजवादी पार्टी के लिए भारी पड़ सकता है, खासकर तब जब पार्टी लगातार ब्राह्मण वोटरों को साधने की कोशिश कर रही है।

क्या है पूरा मामला?

विवाद की शुरूआत एक वायरल वीडियो से हुई, जिसमें समाजवादी पार्टी के प्रवक्ता राजकुमार भाटी कथित तौर पर यह कहते हुए सुनाई दे रहे हैं-न तो ब्राह्मण अच्छा होता है और न ही कोई तवायफ। वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ और देखते ही देखते राजनीतिक विवाद में बदल गया। बीजेपी नेताओं ने इसे ब्राह्मण समाज का अपमान बताते हुए सपा पर हमला बोल दिया।

पुलिस ने दर्ज किया केस, भारी विरोध के बाद मांगी माफी

मामले में भाजपा नेता अजय शर्मा की शिकायत के आधार पर गाजियाबाद के कवि नगर पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज की गई है। पुलिस ने राजकुमार भाटी के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (BNS) की धारा 196(1) के तहत मामला दर्ज किया

है। यह धारा धर्म या समुदाय के आधार पर विभिन्न समूहों के बीच दुश्मनी या वैमनस्य फैलाने से जुड़ी है। शिकायत में कहा गया कि भाटी की टिप्पणी से ब्राह्मण समुदाय की धार्मिक और सामाजिक भावनाएं आहत हुई हैं।

वीडियो वायरल होने और विवाद बढ़ने के बाद राजकुमार भाटी ने सफाई दी और माफी मांग ली। उन्होंने दावा किया कि उनके भाषण के कुछ हिस्सों को काटकर सोशल मीडिया पर फैलाया गया ताकि गलत संदेश दिया जा सके। भाटी ने कहा कि उनका उद्देश्य किसी समुदाय का अपमान करना नहीं था। हालांकि राजनीतिक दलों ने उनकी सफाई को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और इसे "सपा की मानसिकता" से जोड़कर हमला जारी रखा।

भाजपा-कांग्रेस ने सपा पर साधा निशाना

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने इस मुद्दे पर समाजवादी पार्टी पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा- समाजवादी पार्टी का असली चरित्र और उसकी नफरत भरी मानसिकता एक बार फिर सामने आ गई है। बीजेपी नेताओं का कहना है कि सपा लगातार जातीय और सामाजिक विभाजन की राजनीति करती रही है और यह बयान उसी सोच को दिखाता है।

दिलचस्प बात यह रही कि इस मुद्दे पर कांग्रेस ने भी समाजवादी पार्टी का बचाव नहीं किया। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट करते हुए कहा कि किसी भी समुदाय के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल स्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने लिखा-राजनीतिक मतभेद अपनी जगह हैं, लेकिन पूरे समुदाय का अपमान करना बिल्कुल गलत है। सिर्फ माफी मांगना काफी नहीं होगा। ऐसे गैर-जिम्मेदार नेताओं के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए। कांग्रेस के इस बयान को राजनीतिक तौर पर अहम माना जा रहा है क्योंकि यूपी में विपक्षी दलों के बीच पहले से ही समीकरणों को लेकर चचाएं चलती रहती हैं।

चुनावी साल में सपा के लिए क्यों बड़ा मुद्दा? BJP को मिला पेनल्टी कॉर्नर

राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह विवाद समाजवादी पार्टी के लिए चुनावी तौर पर नुकसानदायक साबित हो सकता है। उत्तर प्रदेश में ब्राह्मण वोटर लंबे समय से बीजेपी का महत्वपूर्ण समर्थन आधार माने जाते हैं। हालांकि पिछले कुछ सालों में सपा और अन्य विपक्षी दल भी ब्राह्मण समुदाय को अपने पक्ष में लाने की कोशिश कर रहे थे। ऐसे में सपा प्रवक्ता का यह बयान विपक्षी पार्टी की रणनीति को झटका दे सकता है।

चुनावी साल से पहले इस तरह की बयाबाजी बीजेपी के लिए पेनल्टी कॉर्नर जैसा मौका बताया जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि बीजेपी इस मुद्दे को ब्राह्मण सम्मान और सामाजिक अपमान के रूप में पेश कर सकती है। खासकर तब जब राज्य में चुनावी माहौल धीरे-धीरे गर्म हो रहा है। बीजेपी पहले भी कई मौकों पर विपक्षी नेताओं के विवादित बयानों को बड़ा चुनावी मुद्दा बना चुकी है।

सोशल मीडिया पर भी तेज हुई बहस

मामले के बाद सोशल मीडिया पर भी बहस छिड़ गई है। अब नजर इस बात पर है कि समाजवादी पार्टी राजकुमार भाटी के खिलाफ कोई आंतरिक कार्रवाई करती है या नहीं। अब तक पार्टी नेतृत्व की ओर से कोई औपचारिक बयान सामने नहीं आया है, लेकिन राजनीतिक दबाव लगातार बढ़ता जा रहा है। फिलहाल यह विवाद सिर्फ एक बयान तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि उत्तर प्रदेश की जातीय और चुनावी राजनीति का नया मुद्दा बनता दिखाई दे रहा है।

साहित्यिक योद्धाओं का अनूठा महोत्सव 3 और 4 अक्टूबर को लखनऊ में होगा

लिटरेरी वॉरियर्स ग्रुप के चौथे लिटफेस्ट में देश-विदेश के रचनाकार होंगे शामिल

मुंबई, 13 मई। साहित्य, कला और संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय, प्रगतिशील एवं समावेशी मंच "लिटरेरी वॉरियर्स ग्रुप (एलडब्ल्यूजी)" अपने चौथे वार्षिक साहित्य महोत्सव "लिटफेस्ट 4.0" का आयोजन आगामी 3 और 4 अक्टूबर, 2026 को लखनऊ में करने जा रहा है। इस दो दिवसीय आयोजन में देश-विदेश के लेखक, कवि, साहित्यकार और कला प्रेमी बड़ी संख्या में भाग लेंगे।

यह जानकारी देते हुए देश की सुप्रसिद्ध साहित्यकार और इस ग्रुप की संस्थापक नीलम सक्सेना चंद्रा ने बताया कि साल 2011 में भारत में स्थापित एलडब्ल्यूजी ने एक ऑनलाइन साहित्यिक मंच के रूप में अपनी शुरूआत की थी, जो आज लगभग 1,200 सदस्यों के साथ एक सशक्त अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक नेटवर्क के रूप में विकसित हो चुका है। इस समूह से भारत के साथ-साथ अमेरिका, यूरोप, पश्चिम एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न रचनाकार जुड़े हुए हैं। समूह का उद्देश्य विभिन्न आयु वर्ग, सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लेखकों एवं पाठकों को एक साझा मंच प्रदान करना है, जहाँ रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन मिले और साहित्यिक संवाद को सुदृढ़ किया जा सके। उन्होंने कहा कि एलडब्ल्यूजी समावेशिता, समान अवसर और सामूहिक विकास जैसे मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध है। इसी क्रम में लिटफेस्ट 4.0 के अंतर्गत अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का

आयोजन किया जायेगा। इनमें हिंदी, अंग्रेजी और मराठी भाषाओं में ऑनलाइन काव्य प्रतियोगिता, हिंदी और अंग्रेजी में पुस्तक प्रतियोगिता, पुस्तक विमोचन, काव्य पाठ, नज्म प्रस्तुतियाँ और विभिन्न साहित्यिक कार्यशालाएं शामिल रहेंगी। इनके अतिरिक्त, एलडब्ल्यूजी संस्था वर्ष भर ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों में काव्य गोष्ठियाँ, कहानी पाठ, लेखन प्रतियोगिताएं पैनल चर्चाएं नाटक और संवादात्मक सत्र आयोजित करती रही है, जिसके फलस्वरूप सभी सदस्यों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा निखारने का अवसर मिलता है। एलडब्ल्यूजी समूह अपने सदस्यों की साहित्यिक कृतियों के प्रकाशन और प्रचार के लिए भी विशेष रूप से जाना जाता है। उन्होंने बताया कि समूह का पहला संकलन 'As a Beginner for a Beginning' जनवरी, 2015 में प्रकाशित हुआ था, जबकि हालिया संकलन 'वक्त एक रहस्य - Unscramblinfg Time' नवम्बर, 2024 में प्रकाशित हुआ। इनके अलावा 'शजर की छाँव तले', 'गूंज - Breaking the Shackles', 'अयोध्या - राम और सीता रिटर्न' तथा 'Curry for the Spirited Soul' जैसे संकलन प्रमुख ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर उपलब्ध हैं। मुंबई में संस्था के वरिष्ठ प्रतिनिधि ने बताया कि एलडब्ल्यूजी ने 6 जनवरी, 2023 को अपना पहला ऑफलाइन कार्यक्रम आयोजित किया था, जिसमें मशहूर लेखिका नीलम सक्सेना चंद्रा की पुस्तक का विमोचन किया गया। इसके बाद समूह ने मुंबई के नेशनल सेंटर फॉर द परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए), लखनऊ के राष्ट्रीय पुस्तक मेला और पुणे के कॉलेज ऑफ मिलिट्री इंजीनियरिंग जैसे प्रतिष्ठित स्थलों पर सफलतापूर्वक अनेक कार्यक्रम आयोजित किये हैं। इन आयोजनों में कविता पाठ, पुस्तक विमोचन, नृत्य संगीत प्रस्तुतियाँ और कला प्रदर्शनियाँ प्रमुख आकर्षण रही हैं। एलडब्ल्यूजी का पहला लिटफेस्ट 18 नवम्बर, 2023 को नई दिल्ली स्थित साहित्य अकादमी में आयोजित हुआ था। इसके पश्चात दूसरा संस्करण 14-15 दिसम्बर, 2024 को पुणे और तीसरा संस्करण 4-5 अक्टूबर, 2025 को यशदा, पुणे में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। अब यह महोत्सव साहित्य और कला के एक प्रतिष्ठित वार्षिक आयोजन के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। उन्होंने कहा कि लिटफेस्ट 4.0 के तहत आयोजित प्रतियोगिताओं के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गई हैं तथा विजेताओं को ट्रॉफी, मेडल और प्रमाणपत्र प्रदान किये जायेंगे। कार्यक्रम से सम्बंधित विस्तृत जानकारी एलडब्ल्यूजी की आधिकारिक वेबसाइट, फेसबुक और इंस्टाग्राम पेज पर उपलब्ध कराई जायेगी। इस महोत्सव के माध्यम से एलडब्ल्यूजी एक बार फिर साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है।

थाईलैंड में लखनऊ के युवक की मौत, दोस्तों संग घूमने गया था फुकेट, कैफे में बिगड़ी तबियत, 3 अस्पताल में भर्ती

लखनऊ के गोमतीनगर निवासी कुशाग्र अग्रवाल की थाईलैंड के फुकेट में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। वह अपने चार दोस्तों के साथ घूमने गया था।

(जीएनएस)।

लखनऊः राजधानी लखनऊ के गोमतीनगर निवासी 26 वर्षीय कुशाग्र अग्रवाल की थाईलैंड के फुकेट में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो जाने से परिवार और शहर में सनसनी फैल गई है। कुशाग्र अपने चार दोस्तों के साथ थाईलैंड घूमने गया था। बताया जा रहा है कि 8 मई की रात सभी दोस्त फुकेट के कमला बीच स्थित एक कैफे में खाना खाने पहुंचे थे, जहां देर रात अचानक कुशाग्र समेत चार युवकों की तबीयत बिगड़ गई और वे बेहोश हो गए। सभी को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान कुशाग्र की मौत हो गई, जबकि एक अन्य युवक की हालत गंभीर बनी हुई है। इस घटना के बाद थाईलैंड पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और शुरूआती जांच में ड्रग्स ओवरडोज का एंगल भी सामने आया है।

दोस्तों के साथ घूमने गया था फुकेट

जानकारी के अनुसार, लखनऊ में गोमतीनगर के विशालखंड इलाके में रहने वाला कुशाग्र अग्रवाल अपने

दोस्तों राहुल अग्रवाल, अमन अग्रवाल, एक अन्य राहुल अग्रवाल और भोपाल निवासी आर्यन वर्मा के साथ थाईलैंड घूमने गया था। पांचों दोस्त 8 मई की रात करीब 11 बजे फुकेट के कमला बीच स्थित एक कैफे पहुंचे थे।

थाई पुलिस के मुताबिक सभी ने वहां खाना खाया, लेकिन रात करीब 1:45 बजे अचानक कुशाग्र, अमन और दोनों राहुल की तबीयत बिगड़ गई और वे संदिग्ध हालात में बेहोश हो गए। कैफे कर्मचारियों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद चारों को अस्पताल पहुंचाया गया।

इलाज के दौरान हुई कुशाग्र की मौत

चारों युवकों को पहले स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन हालत गंभीर होने पर कुशाग्र और राहुल को बेहतर इलाज के लिए बचिरा फुकेट अस्पताल रेफर किया गया। इलाज के दौरान 9 मई को कुशाग्र की मौत हो गई। वहीं अन्य युवकों का इलाज जारी है। आर्यन वर्मा की हालत सामान्य बताई जा रही है।

भारतीय दूतावास भी सक्रिय

घटना की जानकारी थाईलैंड पुलिस ने भारतीय दूतावास को दी। इसके बाद भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट जारी कर कहा कि वह थाई अधिकारियों के लगातार संपर्क में है। दूतावास ने मृतक युवक के परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि अन्य भारतीय युवकों की स्वास्थ्य स्थिति पर भी नजर रखी जा रही है।

ड्रग्स ओवरडोज एंगल पर जांच

इस मामले में अब ड्रग्स ओवरडोज का एंगल भी सामने आने लगा है। फुकेट की कमला बीच पुलिस के प्रमुख कर्नल अनुराक प्रिन्यासाथिराकुर ने स्थानीय मीडिया से बातचीत में बताया कि शुरूआती मेडिकल जांच में कुशाग्र और उसके तीन दोस्तों के शरीर में नशीले पदार्थों के संकेत मिले हैं।

प्रिय भाई, मैं इस मुश्किल समय में हमेशा आपके साथ हूं डीएमके प्रमुख व तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने अखिलेश को दी सांत्वना

डीएमके प्रमुख व तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने प्रतीक यादव के निधन पर शोक व्यक्त किया और अखिलेश यादव को सांत्वना दी है।

(जीएनएस)।

लखनऊ,

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के सौतेले भाई प्रतीक यादव के निधन पर तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने शोक व्यक्त किया है और सांत्वना व्यक्त की है।

बीपी, हाइपरटेंशन और इस बीमारी से परेशान थे प्रतीक, चार माह पहले फेफड़ों में हुआ था संक्रमण

स्टालिन ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा कि वह अखिलेश यादव और उनके परिवार के साथ इस मुश्किल समय में हमेशा खड़े हैं। उन्होंने अखिलेश यादव को "प्रिय भाई" बताया। स्टालिन ने कहा, "समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव के सौतेले भाई प्रतीक यादव के निधन से

मैं बहुत दुखी हूं।

अखिलेश यादव पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे, दिया बयान

प्रतीक यादव की मौत के बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव केजीएमयू के पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे। वहां उन्होंने प्रेस से बात करते हुए कहा कि प्रतीक से मेरी दो महीने पहले मुलाकात हुई थी। प्रतीक जुझारू किस्म का इंसान था। वह अपने स्वास्थ्य लेकर सजग था। जीवन में वह आगे बढ़ना चाहता था। उसके इस तरह से चले जाने का दुख है। वह अपनी मेहनत से कुछ करना चाहता था। मौत की वजहों पर उन्होंने कहा कि इस पर जांच होनी चाहिए। परिवार इस मामले में जो फैसला लेगा उसका सम्मान होना चाहिए।

निधन की खबर ने सबको हैरान कर दिया

मुलायम सिंह यादव के छोटे बेटे और अपर्णा यादव के पति प्रतीक यादव का बुधवार को निधन हो गया। प्रतीक यादव के निधन की खबर ने सबको हैरत में डाल दिया। प्रतीक 38 साल के थे। शुरूआती जानकारी मिली है कि सुबह करीब छह बजे सिविल अस्पताल की इमरजेंसी में लाए गए थे। डॉक्टर ने जांच पड़ताल करके उन्हें मृत घोषित कर दिया।

जानकारी मिली है कि बुधवार को प्रतीक की अचानक तबीयत बिगड़ गई थी। अभी तक प्रतीक की मौत की वजह साफ नहीं हुई है। मुलायम सिंह के बेटे प्रतीक अपने पीछे पत्नी अपर्णा और दो बेटियों को छोड़ गए हैं। इस पूरे घटनाक्रम के दौरान पत्नी अपर्णा यादव राजधानी लखनऊ में नहीं थीं। प्रतीक यादव के निधन की खबर मिलते ही नेताओं का लखनऊ के सिविल अस्पताल में जमा होना शुरू हो गया।

भारत ने ऐंठी चाबी और छटपटाने लगा चीन, एक कदम ने बढ़ा दी ड्रैगन की चिंता

भारत के एक कदम से चीन की बेचैनी बढ़ गई है। सौर सेलों के प्रोडॅक्शन में दबदबा रखने वाले चीन की इन चीजों पर टैरिफ लगा दिए हैं।

भारत चीन विश्व व्यापार संगठन (जीएनएस)।

नई दिल्लीः भारत के एक कदम से चीन की छटपटाहट बढ़ गई है। यह बेचैनी इतनी बढ़ी कि वह भारत के खिलाफ विश्व व्यापार संगठन (WTO) में पहुंच गया है। दरअसल, भारत ने चीन के दबदबे वाले सौर सेलों को लेकर टैरिफ और कस्टम ड्यूटी समेत कुछ जरूरी कदम उठाए हैं। इससे बीजिंग की चिंता बढ़ गई है।

भारत ने ऐसा क्या कर दिया, जिससे चीन परेशान

मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, चीन ने सौर सेल, मॉड्यूल और सूचना प्रौद्योगिकी (IT) क्षेत्रों के लिए नई दिल्ली द्वारा अपनाए जा रहे समर्थन उपायों को लेकर भारत के खिलाफ विश्व व्यापार संगठन में एक मामला दायर कर दिया था। अब इस विवाद निपटाने वाले विश्व व्यापार संगठन से

चीन ने एक पैनल गठित करने की अपील की है।

बीते साल भारत से नहीं बन पाई थी सहमति

चीन ने यह अनुरोध पिछले साल दिसंबर में दायर विवाद पर आपसी सहमति से समाधान तक पहुंचने के लिए द्विपक्षीय परामर्शों के फेल होने के बाद किया गया है। आपसी सहमति से समाधान तक पहुंचने के मकसद से 10 फरवरी, 2026 को परामर्श आयोजित किए गए थे। विश्व व्यापार संगठन ने कहा है-दुर्भाग्य से, उन परामर्शों से विवाद का समाधान नहीं हो सका। इसलिए, चीन ने पैनल के गठन के लिए अनुरोध दिया है।

चीन का क्या है भारत पर आरोप

चीन का आरोप है कि कुछ प्रौद्योगिकी उत्पादों पर भारत द्वारा लगाया गया टैरिफ या आयात शुल्क और आयातित वस्तुओं के स्थान पर घरेलू उत्पादों के उपयोग जैसे उपाय चीनी वस्तुओं के साथ भेदभाव करते हैं।

चीन का आरोप-भारत ने किया नियमों का उल्लंघन

सोलर सेलों और आईटी से जुड़ी वस्तुओं का चीन प्रमुख निर्यातक है। उसका दावा है कि भारत के ये समर्थन उपाय और प्रोत्साहन विश्व व्यापार संगठन के टैरिफ और व्यापार पर सामान्य समझौता 1994, सब्सिडी और प्रतिपूरक उपायों पर समझौता और व्यापार-संबंधित निवेश उपायों पर समझौते से संबंधित नियमों का उल्लंघन करते हैं।

WTO के क्या हैं नियम

डब्ल्यूटीओ नियमों के अनुसार, विवाद निपटान प्रक्रिया का पहला चरण परामर्श मांगना है। यदि भारत के साथ अनुरोधित परामर्श से कोई संतोषजनक समाधान नहीं निकलता है, तो चीन डब्ल्यूटीओ से इस मामले में एक पैनल गठित करने का अनुरोध कर सकता है ताकि उठाए गए मुद्दे पर निर्णय लिया जा सके।

सूरत की कपड़ा फैक्टरी से मुक्त कराए गए 91 नन्हें बाल मजदूर, सबसे छोटा महज 7 साल का

सरकार, प्रशासन व नागरिक समाज संगठनों की छापे की एक साझा कार्रवाई में ट्रैफिकिंग के जरिए लाए गए और सूरत की एक कपड़ा फैक्टरी में मामूली पैसों पर खटाए जा रहे 91 बाल मजदूरों को मुक्त कराया गया। मुक्त कराए गए इन बच्चों की उम्र सात से 14 के बीच है। हालांकि भनक लगते ही सभी ट्रैफिकर और फैक्टरी मालिक मौके से फरार हो गए। मुक्त कराए गए बच्चों में से ज्यादातर राजस्थान के जनजातीय इलाकों के हैं जबकि तीन उत्तर प्रदेश के और एक-एक बच्चे झारखंड व बिहार के हैं। इन सभी को बाल कल्याण समिति, सूरत के समक्ष पेश किया गया और कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

गायत्री सेवा संस्थान (जीएसएस) की छानबीन के आधार पर हुई छापे की इस कार्रवाई में जीएसएस सहित राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (एनसीपीसीआर), एंटी ह्यूमन ट्रैफिकिंग यूनिट, राजस्थान के 22 पुलिस अफसरों, सूरत के पूना थाने के अफसरों के साथ नागरिक समाज संगठन एसोसिएशन फॉर वालंटरी एक्शन (एवीए) भी शामिल था। एवीए और जीएसएस देश में बाल अधिकारों की सुरक्षा व संरक्षण के काम कर रहे 250 से भी अधिक नागरिक समाज संगठनों के देश के सबसे बड़े नेटवर्क जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन के सहयोगी हैं।

गायत्री सेवा संस्थान महीने भर से सूरत की इस कपड़ा फैक्टरी की निगरानी कर रहा था और छानबीन में यहां बड़ी संख्या में बाल मजदूरों की मौजूदगी की पुष्टि के बाद उसने एनसीपीसीआर को इसकी जानकारी दी। मुक्त कराए बच्चों ने फिर पुलिस को सुराग दिए और उन्हें उन जगहों का पता बताया जहां बाल मजदूरी कराई जा रही थी। गायत्री सेवा संस्थान के

निदेशक डॉ. शैलेंद्र पंड्या ने बताया, 'बच्चे हमें एक इमारत के पास ले गए जो बाहर से बंद थी। लेकिन उन्होंने बताया कि अंदर बच्चे काम कर रहे हैं। हम जब अंदर गए तो पाया कि वहां सात साल तक के बच्चों से काम कराया जा रहा था। सभी बच्चे घबराए हुए और बदहवासी की हालत में थे और 12 घंटे की शिफ्ट में काम करने के बाद थके हुए थे।'

डॉ. पंड्या ने बताया कि अंदर जाने के बाद वे बच्चों की बदहाली देखकर दंग रह गए। आठ साल के एक बच्चे के पास पहनने को शर्ट तक नहीं थी। वह दूसरे बच्चों के पीछे छिप गया और उनसे पूछ रहा था कि क्या कोई थोड़ी देर के लिए अपनी शर्ट उसे दे सकता है। उन्होंने पुलिस की तारीफ करते हुए कहा कि पुलिस और सभी हितधारकों की त्वरित कार्रवाई और मामले को गंभीरता से लेने के कारण ही इतनी बड़ी संख्या में बच्चों को मुक्त करा पाना संभव हो पाया।

प्रारंभिक जांच से पता चला है कि इन बाल दुव्यार्पारियों और फैक्टरी मालिकों ने संदेह से बचने के लिए तमाम तरीके अपना रखे थे। छोटे बच्चों को बिल्कुल सुबह यहां लाया जाता था और फिर इमारत के दरवाजे बाहर से बंद कर दिए जाते थे। शाम को सात बजे काम की शिफ्ट खत्म हो जाने के बाद ही दरवाजे खोले जाते थे।

इन सभी बच्चों को आस-पास की कालोनियों में बहुत ही दयनीय और अमानवीय हालत में रखा जाता था। एक छोटे से कमरे में 10 से 12 बच्चे रहते थे जहां बुनियादी सुविधाओं के नाम पर कुछ भी नहीं था। पूछताछ के दौरान कुछ बच्चों ने बताया कि उनके माता-पिता को पता था कि उन्हें मजदूरी के लिए यहां लाया गया है। उधर, ज्यादातर छोटे बच्चों ने बताया कि उन्हें घुमाने के नाम पर यहां लाया गया था और उन्हें कतई अंदाजा नहीं था कि यहां उनसे मजदूरी कराई जाएगी। यह भी पता चला कि कुछ बच्चे इन कपड़ा इकाइयों में तीन-चार साल से काम कर रहे थे जबकि बाकियों को हाल ही में यहां लाया गया था। मुक्त कराए गए बच्चों में आठ और दस साल के दो भाई भी थे जिन्हें राजस्थान के उदयपुर जिले से लाया गया था।

ट्रैफिकिंग गिरोहों और बाल मजदूरी के तार मजबूती से जुड़े होने को रेखांकित करते हुए जस्ट राइट्स फॉर चिल्ड्रेन के राष्ट्रीय संयोजक रवि कांत ने कहा, 'इस छापे से यह तथ्य स्थापित हो जाता है कि ट्रैफिकिंग गिरोह कितने संगठित हैं और उनकी जड़ें कितनी गहरी हैं। खास तौर से जनजातीय इलाकों और संवेदनशील परिवारों के बच्चों को झूठे वादों के जाल में फंसा कर ऐसी शोषणकारी परिस्थितियों में धकेल दिया जाता है जहां वे बाहरी दुनिया से कट जाते हैं और अपना बचपन खो बैठते हैं। यह मामला एक बार फिर अंतरराज्यीय समन्वय को मजबूत बनाने, बाल मजदूरी की मांग व आपूर्ति पर नजर बनाए रखने, बच्चों का शोषण करने वाले नियोक्ताओं और शोषण में शामिल सभी बिचौलियों की धरपकड़ और उनकी जवाबदेही तय करने की तत्काल जरूरत को साबित करता है।'

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

जितेंद्र परमार

8595950825

RNI No.: UPHIN/25/A1698 Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh.
and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : VINOD KUMARI
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

सम्पादकीय

देश की आन पर चोट पहुंचाती हैं बड़े स्तर पर हुई पेपर लीक की घटनाएं

राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी यानि एनटीए द्वारा 3 मई को आयोजित मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट 2026 का प्रश्न पत्र लीक होने के कारण मंगलवार को प्रवेश परीक्षा न सिर्प रद्द कर दी गई बल्कि इस अपराध की समुचित जांच के लिए केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) को मामला सौंप दिया गया।

दरअसल गत रविवार यानि 3 मई को एनटीए ने देश के 551 शहरों में और विदेश के 14 शहरों में नीट की परीक्षा का आयोजन 23 लाख पंजीवृत परीक्षार्थियों के लिए किया गया। लेकिन जब सूचनाएं मिलीं कि वुछ स्वाथी तत्वों ने प्रश्न पत्र लीक कर दिया है तो एनटीए ने सरकार के साथ मिलकर इस आरोप की जांच कानून प्रवर्तन एजेंसी से करवाने का पैसला किया। प्रथम दृष्ट्या जांच एजेंसी को लगा कि नीट के पेपर लीक हुए हैं तो पेपर रद्द करने की घोषणा कर दी गई। असल में देश में कई कोचिंग सेंटर प्रतिद्वन्द्विता की भावना से ग्रस्त होने के कारण प्रश्न पत्र लीक करने की ओछी हरकत करते हैं। ये कोचिंग सेंटर अपने संस्थान में अच्छे रिजल्ट के प्रचार हेतु प्रश्न पत्र लीक करने की शरारत तो करते हैं किन्तु उनके पैसे कमाने के लिए इस तरह की ठग विद्या का असर भारतीय किशोरों की मानसिकता पर कितना घातक साबित होता है इसकी कोई भी परवाह ये निष्ठुर कोचिंग संस्थान नहीं करते। झूठी शान, मान एवं छवि सुधारने के लिए कोचिंग संस्थान इस देश के तमाम उन छात्रों की तकदीर में आग लगा देते हैं जो परीक्षा देने की आयु सीमा समाप्त होने के बिल्वुल निकट होते हैं। इसके अलावा जब परीक्षाथी देखता है कि परीक्षाएं बार-बार टल रही हैं तो उसको घोर निराशा होती है और वे देश की लोकतांत्रिक संस्थाओं के बारे में नकारात्मकता के शिकार हो जाते हैं। बहरहाल सीबीआई की जांच होने पर अपराधी तो पकड़े ही जाएंगे किन्तु सरकार को चाहिए कि अब समय आ गया है जब परीक्षा प्रणाली में विधिवत सुधार और बदलाव किए जाएं। परीक्षा विशेषज्ञों की सलाह से एनटीए के कामकाज में व्यापक सुधार न करना हो तो मेडिकल कालेजों को खुद ही प्रवेश परीक्षा लेने का अधिकार मिलना चाहिए। एनटीए जैसी एजेंसी पूरे देश और विदेशों में जितनी व्यापकता से परीक्षाएं आयोजित करती हैं, उसे देखते हुए उसके पास प्रश्नपत्र को लीक होने से बचाने की व्यवस्था नहीं है। आखिर एनटीए का गठन मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने किया था तो उन्होंने देश के युवा परीक्षार्थियों को आश्वस्त किया था कि अब कभी प्रश्न पत्र लीक नहीं होगा किन्तु वास्तविकता यह है कि एनटीए की परीक्षा से पहले ही कोचिंग संस्थाएं तरकीब खोज कर प्रश्न पत्र लीक कर देते हैं। इसीलिए मासूम और सामान्य प्रशिक्षार्थियों के जीवन से मजाक करने वाले शरारती तत्वों के खिलाफ कठोरता से कार्रवाई की जानी चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि प्रश्न पत्र को लीक करने के आरोप को इतना संद्गोय बनाना चाहिए कि वह राजद्रोह की श्रेणी में आ जाए ताकि धन कमाने और अपना कोचिंग सेंटर को अच्छा बताने की प्रवृत्ति पर नियंत्रण लग सके। यदि इन अपराधियों के खिलाफ जल्दी ही वुछ नहीं किया गया तो दूसरे देशों में प्रवेश लेने के लिए हमारे देश के छात्र विवश होंगे।

ट्रंप को चीन का एडवांस गिफ्ट? पाकिस्तान की चढ़ा दी बलि, लीक कर दी छुपाए गए ईरानी विमानों की लोकेशन!

(जीएनएस)।

चीन की एक कंपनी ने पाकिस्तान की सैटेलाइट तस्वीरें शेयर की हैं, जिसमें संदिग्ध ईरानी उ-130 विमान की मौजूदगी का खुलासा हो गया है. रेतीले रंग (रंल्ला उेंङ्ग) के इस विमान ने उन चचाओं को हवा दे दी है जिनमें पाकिस्तान पर ईरानी सैन्य संपत्तियों को छिपाने का आरोप लगाया गया था. ये खुलासा ट्रंप के बीजिंग दौरे से पहले अमेरिका के लिए एडवांस गिफ्ट माना जा रहा है.

इस्लामाबादः ईरान-अमेरिका की खींचतान के बीच पाकिस्तान के चरित्र पर सवाल खड़े हो गए हैं. मीडिएटर बने इस देश ने पहले तो अपना न्यूट्रल रहने का धर्म तोड़ा और फिर माई-बाप अमेरिका को धोखा दिया. पाकिस्तान पर लांछन लग रहा है कि उसने अपने एयरबेस पर गुपचुप तरीके से ईरान के मिलिट्री विमानों को पनाह दी है. इस खतरनाक खेल की पोल पाकिस्तान के 'सदाबहार दोस्त' चीन ने खोल दी है. ट्रंप के बीजिंग दौरे से पहले चीन ने कुछ सैटेलाइट फोटोज शेयर की हैं, जिनमें ईरानी विमानों की सही लोकेशन और उनकी साफ-साफ तस्वीरें दुनिया के सामने आ गई हैं. ये ट्रंप के लिए किसी एडवांस गिफ्ट से कम नहीं है.

चीन की सैटेलाइट तस्वीरों में खुली पाकिस्तान की पोल

सोशल मीडिया पर जियोपॉलिटिकल मुद्दों पर बात करने वाले मशहूर डेमियन साइमन अकाउंट से एक ऐसी जानकारी साझा की है जिसने वॉशिंगटन से लेकर बीजिंग तक खलबली मचा दी है. चीन की एक प्रतिबंधित कंपनी 'मिजारविजन' (ट्रॅ१५२ड्ढल्ल) ने अप्रैल 2026 की कुछ सैटेलाइट तस्वीरें सार्वजनिक की हैं. इन तस्वीरों में पाकिस्तान के सबसे सेंसेटिव नूर खान एयरबेस पर एक उ-130 हरक्यूलिस ट्रांसपोर्ट विमान खड़ा दिखाई दे रहा है.

कैसे पकड़ा गया ईरानी विमान?

इस विमान का रंग 'सैंड कैमॉफ्लाज' है, यानी ये रेगिस्तानी मिट्टी जैसा पीला-भूरा है. डिफेंस एक्सपर्ट्स चिल्ला-चिल्ला कर कह रहे हैं कि पाकिस्तान की एयरफोर्स (ढअक्र) इस रंग के विमानों का इस्तेमाल ही नहीं करती. पाकिस्तान के विमान सिलेटी रंग के होते हैं तो फिर सवाल उठता है कि पाकिस्तान की इस सेंसेटिव लोकेशन पर ये 'अजनबी' विमान क्या कर रहा है?

इस पूरी कहानी में सबसे बड़ा ट्विस्ट चीन का रोल है. आखिर चीन की एक कंपनी ने अपने ही दोस्त पाकिस्तान की इतनी गुप्त जानकारी लीक क्यों की?

ट्रंप के लिए एडवांस गिफ्टः 14 मई को ट्रंप और शी जिनपिंग मिलने वाले हैं. मुमकिन है कि चीन ने यह जानकारी लीक करके ट्रंप को ये संदेश दिया हो कि 'हमारे पास सबकी कुंडली है'. यह ट्रंप के लिए एक कूटनीतिक 'तोहफा' हो सकता है ताकि बातचीत में चीन का पलड़ा भारी रहे.

पाकिस्तान की बलिः चीन को जब भी अपना फायदा दिखता है, वो छोटे खिलाड़ियों की परवाह नहीं करता. पाकिस्तान को एक्सपोज करके चीन ने दिखा दिया है कि वह अमेरिका के साथ बड़ी डील के लिए किसी भी हद तक जा सकता है.

चीन में सेंसरशिप का खेलः चीन में बिना सरकार की मर्जी के पत्ता भी नहीं हिलता तो फिर नूर खान एयरबेस की फोटो बाहर आना महज एक इत्तेफाक तो बिल्कुल नहीं हो सकता.

अमेरिका की नाराजगी और पाकिस्तान पर लटकी तलवार

अगर यह साबित हो जाता है कि पाकिस्तान ईरान की मदद कर रहा है, तो उसके लिए 'विनाशकाले विपरीत बुद्धि' वाली बात हो जाएगी. पाकिस्तान खुद अमेरिका से मिले उ-130 विमानों का इस्तेमाल करता है. अगर वह अमेरिकी तकनीक का इस्तेमाल ईरान जैसे प्रतिबंधित देश को बचाने के लिए कर रहा है, तो अमेरिका उसे बख्शेगा नहीं.

इस खुलासे के बाद पाकिस्तान को मिलने वाली ऋ-16 जैसे सैन्य सहायता और क्टऋ जैसे संस्थानों से मिलने वाले कर्ज पर भी संकट आ सकता है.

फिलहाल पाकिस्तान के रक्षा गलियारों में सन्नाटा पसरा है. एक छोटी सी तस्वीर ने ये साबित कर दिया है कि कूटनीति की बिसात पर मोहरे कब पिट जाएं, कुछ कहा नहीं जा सकता. चीन ने अपनी चाल चल दी है, अब देखना है कि पाकिस्तान इस 'धोखे' से कैसे उबरता है.

स्कूल में दोस्ती, दस साल रिलेशन फिर शादी, रिश्ते में दरार भी आई; अपर्णा-प्रतीक की कहानी

(जीएनएस)।

पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के भाई प्रतीक यादव का लखनऊ में निधन हो गया। उन्हें सुबह करीब 5:55 बजे लखनऊ के सिविल अस्पताल में लाया गया था। डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया था। आइए जानते हैं प्रतीक यादव और उनकी की लव लाइफ के बारे में

समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव के छोटे बेटे और भाजपा नेत्री अपर्णा यादव के पति प्रतीक यादव का 38 वर्ष की आयु में लखनऊ में निधन हो गया है। बुधवार की सुबह अचानक तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें लखनऊ के सिविल अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। प्रतीक की मौत का सटीक कारण अभी स्पष्ट नहीं है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में ही मौत की वजह साफ हो सकेगी।

प्रतीक यादव, मुलायम सिंह यादव की दूसरी पत्नी साधना गुप्ता के बेटे थे। प्रतीक अपने पीछे अपनी पत्नी अपर्णा यादव और दो बेटियों को छोड़ गए हैं। अपर्णा यादव, जो मूल रूप से उत्तराखंड की रहने वाली हैं, वर्तमान में उत्तर प्रदेश महिला आयोग की उपाध्यक्ष हैं और भारतीय जनता पार्टी से जुड़ी हैं। उनके पिता अरविंद सिंह एक वरिष्ठ पत्रकार हैं। प्रतीक यादव, समाजवादी पार्टी के राजनीतिक परिवार से जुड़े होने के बावजूद, अपनी एक अलग पहचान रखते थे।

प्रतीक यादव और अपर्णा यादव की प्रेम कहानी कॉलेज के दिनों से शुरू हुई थी। बताया जाता है कि दोनों पहली बार 2001 में मिले थे, वे हाईस्कूल में थे। प्रतीक ने बताया था कि शादी से पहले वो लगभग 10 साल तक रिश्ते में रहे।

दस साल की दोस्ती के बाद प्रतीक यादव (38) और अपर्णा यादव (36) का प्रेम-विवाह 4 दिसंबर 2011 को मुलायम सिंह यादव के पैतृक गांव सैफई में बेहद भव्य समारोह में हुआ था। इस दौरान, अपर्णा ने अपनी शिक्षा पर भी ध्यान केंद्रित किया और मैनचेस्टर से इंटरनेशनल पॉलिटिक्स में मास्टर डिग्री हासिल की थी।

लंबे वैवाहिक जीवन के बावजूद, इस साल दोनों के बीच संबंधों में दरार की खबरें आई। दोनों के तलाक की अटकलें बी लगाई गईं। हालांकि, प्रतीक ने बाद में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा कर अपने रिश्ते को गहरा बताते हुए इन अटकलों पर विराम लगा दिया था। राजनीतिक परिवार से जुड़े होने के कारण, उनके निजी जीवन से जुड़ी यह बात अक्सर चर्चा में रही।

सूत्रों के अनुसार, प्रतीक यादव कुछ समय से अस्वस्थ थे और उन्हें कुछ दिनों पहले मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने उनसे मुलाकात कर उनका हालचाल जाना था।

तबीयत में सुधार के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल गई थी, लेकिन बुधवार को अचानक उनकी तबीयत बिगड़ने पर उन्हें लखनऊ के सिविल अस्पताल में लाया गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। प्रतीक यादव का यह आकस्मिक निधन राजनीतिक गलियारों में शोक की लहर दौड़ा गया है। उनके निधन से परिवार और समर्थकों को गहरा सदमा लगा है।

'3 बार मर कर जिंदा हुई हूं'...नासा और अमेरिकी नेवी से जुड़ी पूर्व वैज्ञानिक इंग्रिड होनकाला ने बताया कब, कैसे और कहां महसूस की मौत?

(जीएनएस)।

कुछ पर्सनल एक्सपीरियंस इंटरनेट पर अचानक सुर्खियां बन जाते हैं, खासकर तब जब उनका संबंध साइंस, चेतना और मौत जैसे बड़े सवालों से हो। ऐसा ही मामला नासा और अमेरिकी नेवी से जुड़ी पूर्व वैज्ञानिक इंग्रिड होनकाला का है। इंग्रिड ने अपने जीवन में तीन बार ठीं१-ॐइँ ए७स्री१ील्लू यानी मौत के बेहद करीब पहुंचने का अनुभव होने का दावा किया है। इंग्रिड का दावा है कि उन्होंने एक नहीं बल्कि तीन-तीन बार मौत का एक्सपीरियंस लिया है। उनका कहना है कि इन घटनाओं ने जीवन, चेतना और मृत्यु को देखने का उनका नजरिया पूरी तरह बदल दिया।

2 साल की उम्र में पानी की टंकी में गिरीं

New York Post की Jam Press के हवाले से छपी रिपोर्ट के मुताबिक, इंग्रिड होनकाला का पहला Near-Death Experience तब हुआ जब वह सिर्फ 2 साल की थीं। बताया गया कि वह ठंडे पानी से भरी एक टंकी में गिर गई थीं। उस समय उन्हें शुरूआत में काफी डर और घबराहट महसूस हुई थी। उनका शरीर संघर्ष कर रहा था और स्थिति बेहद खतरनाक थी।

'डर खत्म हुआ और अचानक गहरी शांति महसूस हुई'

इंग्रिड का दावा है कि कुछ ही समय बाद उनका अनुभव पूरी तरह बदल गया। उन्होंने कहा कि ऐसा लगा जैसे वह किसी ऐसी वास्तविकता में प्रवेश कर गई हों, जो इंसानी शरीर और पांच इंद्रियों से परे हो। उनके मुताबिक, अचानक डर खत्म हो गया और उसकी जगह बेहद गहरी शांति और स्थिरता ने ले ली। उन्होंने कहा कि वह अनुभव किसी सपने जैसा नहीं बल्कि बेहद वास्तविक महसूस हो रहा था।

शरीर से अलग होने जैसा महसूस हुआ

इंग्रिड होनकाला ने अपने अनुभव को "Out of Body Experience" भी बताया। उनके शब्दों में, "ऐसा लगा जैसे मेरी चेतना मेरे शरीर से अलग हो गई हो।" उन्होंने दावा किया कि वह खुद को "शुद्ध चेतना, जागरूकता और प्रकाश" के रूप में महसूस कर रही थीं। उनका कहना है कि उस दौरान वह आसपास हो रही चीजों को समझ पा रही थीं और अपनी मां को पहचान भी पाईं, जिन्होंने बाद में उन्हें बचाया और होश में लाया।

25 और 52 साल की उम्र में फिर हुए ऐसे अनुभव

इंग्रिड के अनुसार, उनके जीवन में सिर्फ एक बार नहीं बल्कि कुल तीन बार ऐसा हुआ। दूसरा अनुभव उन्हें

25 साल की उम्र में मोटरसाइकिल दुर्घटना के बाद हुआ। वहीं तीसरी बार 52 साल की उम्र में एक मेडिकल इमरजेंसी के दौरान उन्हें फिर वैसा ही एहसास हुआ। रिपोर्ट के मुताबिक, दोनों घटनाओं में भी उन्हें वही शांति, जागरूकता और शरीर से परे होने का अनुभव महसूस हुआ।

रहस्यमयी अनुभवों के बाद भी नहीं छोड़ा साइंस का साथ

इन गहरे और रहस्यमयी अनुभवों के बावजूद इंग्रिड होनकाला ने साइंस का रास्ता नहीं छोड़ा। उन्होंने समुद्री साइंस में PhD की और वैज्ञानिक क्षेत्र में अपना करियर बनाया। उनका कहना है कि इन घटनाओं ने उन्हें साइंस से दूर नहीं किया, बल्कि उनकी जिज्ञासा और ज्यादा बढ़ा दी।

'साइंस और आध्यात्मिकता दुश्मन नहीं हैं'

इंग्रिड का मानना है कि साइंस और आध्यात्मिकता को हमेशा एक-दूसरे के विरोधी रूप में नहीं देखना चाहिए। उन्होंने कहा, "संभव है कि साइंस और आध्यात्मिकता दोनों एक ही रहस्य को अलग-अलग नजरियों से समझने की कोशिश कर रहे हों।" उनके मुताबिक, चेतना और जीवन को लेकर अभी भी बहुत कुछ ऐसा है जिसे इंसान पूरी तरह नहीं समझ पाया है।

इन अनुभवों ने बदल दी जीवन को देखने की सोच

इंग्रिड होनकाला ने बताया कि इन Near-Death Experiences के बाद उनकी सोच पूरी तरह बदल गई। पहले वह खुद को एक अलग इंसान के रूप में देखती थीं, लेकिन अब उन्हें लगता है कि सभी लोग किसी बड़ी चेतना का हिस्सा हो सकते हैं। उनके अनुसार, इंसान शायद सिर्फ शरीर नहीं बल्कि चेतना की अभिव्यक्ति हैं।

मौत को अब अंत नहीं मानतीं इंग्रिड

इन घटनाओं के बाद इंग्रिड का मृत्यु को देखने का नजरिया भी बदल गया। उन्होंने कहा कि अब उन्हें मौत "अंत" जैसी नहीं लगती। उनके मुताबिक, यह सिर्फ चेतना के एक रूप से दूसरे रूप में जाने जैसा बदलाव या ट्रांजिशन हो सकता है।

साइंस किसे मानता है Near Death Experiences?

यह लेख इंग्रिड होनकाला द्वारा किए गए दावों और उनके व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है। इन दावों की स्वतंत्र रूप से पुष्टि नहीं की गई है। वैज्ञानिकों में Near-Death Experiences को लेकर अलग-अलग राय मौजूद हैं।

प्रतीक यादव के निधन के बाद क्यों वायरल हो रहा अखिलेश के साथ का ये वीडियो, भावुक कर देता है भाइयों का प्यार

(जीएनएस)।

समाजवादी पार्टी (SP) के संस्थापक स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव के परिवार से आज एक बेहद दुखद खबर सामने आई है। सपा संस्थापक के छोटे बेटे और अखिलेश यादव के भाई प्रतीक यादव का बुधवार सुबह लखनऊ के सिविल अस्पताल में निधन हो गया। मात्र 38 वर्ष की उम्र में उनके निधन से राजनीतिक गलियारों में शोक की लहर दौड़ गई है। इस बीच, सोशल मीडिया पर अखिलेश यादव और प्रतीक यादव का एक पुराना वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जो दोनों भाइयों के बीच के गहरे प्रेम और सम्मान को दर्शाता है।

वायरल हो रहा यह वीडियो किसी पारिवारिक समारोह का लग रहा है। वीडियो में देखा जा सकता है कि प्रतीक यादव अपनी पत्नी अपर्णा यादव और अपनी दोनों बेटियों के साथ समारोह में पहुंचे हैं।

जैसे ही उनका सामना बड़े भाई अखिलेश यादव से होता है, अखिलेश मुस्कुराते हुए हाथ आगे बढ़ाते हैं और स्वागत करते हैं। वहीं, छोटे भाई

प्रतीक और उनकी पत्नी अपर्णा यादव झुककर अखिलेश यादव के पैर छूते हैं। दो भाइयों के मिलन का यह दृश्य आज लोगों की आंखें नम कर रहा है।

दरअसल, प्रतीक यादव को बुधवार सुबह करीब 5:55 बजे लखनऊ के सिविल अस्पताल लाया गया था, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। रिपोर्ट्स के मुताबिक वे पिछले कुछ समय से फेफड़ों और लीवर से संबंधित गंभीर बीमारियों से जूझ रहे थे। हालांकि, पुलिस मामले की जांच कर रही है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार है।

कल होगा अंतिम संस्कार

सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने पोस्टमार्टम हाउस पहुंचकर भाई को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने प्रतीक को एक 'नेक इंसान' बताया जो हमेशा अपने बिजनेस पर ध्यान केंद्रित रखते थे। प्रतीक यादव का पार्थिव शरीर उनके लखनऊ स्थित आवास पर लाया जा चुका है, जहां सीएम योगी आदित्यनाथ और डिंपल यादव समेत कई दिग्गज नेताओं के पहुंचने की संभावना है। रिपोर्ट्स के मुताबिक उनका अंतिम संस्कार कल लखनऊ में किया जाएगा।

प्रतीक यादव राजनीति से दूर रहकर अपना फिटनेस और रियल एस्टेट का बिजनेस संभालते थे। उन्होंने ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी ऑफ लीड्स से शिक्षा प्राप्त की थी। प्रतीक यादव अपने पीछे पत्नी अपर्णा यादव और दो बेटियों को छोड़ गए हैं। पूरा यादव परिवार और उनके समर्थक इस समय गहरे शोक में हैं।

फिल्म इंडस्ट्री को बड़ा झटका, 48 साल के मशहूर एक्टर दिलीप राज का निधन, कैसे गई जान?

मशहूर कन्नड़ एक्टर दिलीप राज का निधन हो गया हो है। 'मिलना' जैसी फिल्मों और 'हिटलर कल्याणा' जैसे टीवी शो के लिए मशहूर दिलीप राज के अचानक निधन से उनके प्रशंसक और मनोरंजन जगत सदमे में है।

(जीएनएस)।

मशहूर कन्नड़ अभिनेता और निमार्ता दिलीप राज अब इस दुनिया में नहीं रहे। बताया जा रहा है कि 48 साल की उम्र में उनका दिल का दौरा पड़ने से उनका निधन हो गया। हार्ट अटैक के बाद उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया, लेकिन उन्हें बचाया नहीं जा सका। उनके अचानक निधन की खबर से कन्नड़ फिल्म और टेलीविजन जगत सदमे में है, एक्टर के फैंस और को-स्टार अभिनेता के निधन पर शोक व्यक्त कर रहे हैं और सोशल मीडिया के जरिए श्रद्धांजलि दे रहे हैं।

शोक में कन्नड़ इंडस्ट्री

अनुभवी अभिनेता डोडन्ना ने दिलीप राज के निधन पर दुख व्यक्त करते हुए कहा, 'दिलीप राज के पिता एच.एम. शिवरुद्रप्पा हैं। वे मूल रूप से अरसिकेरे के रहने वाले थे। उन्होंने और मेरे भाई ने साथ-साथ पढ़ाई की थी। दिलीप राज के निधन की खबर सुनकर मुझे गहरा सदमा लगा है। मेरा दिल दुख रहा है। वे हमारे बच्चों जैसे थे।'

फिल्मों और टीवी इंडस्ट्री में रहे एक्टिव

दिलीप राज फिल्मों के साथ-साथ टेलीविजन, थिएटर और डबिंग में अपने काम के लिए जाने जाते थे। सालों से, उन्होंने कई उल्लेखनीय परियोजनाओं में काम किया, जिनमें 'मिलन', 'यू-टर्न', 'ऑर्केस्ट्रा मैसूर', 'बॉयफ्रेंड' और 'लव मॉकटेल 3' जैसे प्रोजेक्ट शामिल हैं। 'मिलन' में दिवंगत अभिनेता पुनीत राजकुमार के साथ अभिनय करने के बाद उन्हें काफी तारीफ मिली और खलनायक के रूप में उनके अभिनय की व्यापक रूप से सराहना की गई।

इन शोज में किया काम

फिल्मों के अलावा, दिलीप कन्नड़ टेलीविजन पर भी एक जाना-पहचाना चेहरा थे। उन्होंने 'हिटलर कल्याणा', 'कंबड़ा माने', 'जननी', 'अर्ध सत्य', 'रंगोली', 'कुमकुम भाग्य', 'मंगल्या' और 'प्रीतिगति' जैसे धारावाहिकों में काम किया। बाद में उन्होंने 'रथसप्तमी' से टेलीविजन पर वापसी की और कई रियलिटी शोज को भी होस्ट किया। दिलीप राज ने अपने बैनर डीआर क्रिएशन्स के जरिए निर्माण क्षेत्र में भी सफलतापूर्वक कदम रखा। उन्होंने 'पारू', 'ना निन्ना बिदलारे' और 'कृष्णा रुक्कू' जैसे धारावाहिकों का निर्माण किया। 'हिटलर कल्याणा' में मुख्य भूमिका ने टेलीविजन दर्शकों के बीच उनकी लोकप्रियता को और मजबूत किया।

मोहम्मद शमी को नहीं मिलेगी टीम इंडिया में जगह, अजित अगरकर की रणनीति आई सामने, चाह रहे नये खिलाड़ियों पर नजर रखना

(जीएनएस)।

भारतीय क्रिकेट में इस समय केवल IPL 2026 की गूंज है, लेकिन पर्दे के पीछे चीफ सिलेक्टर अजीत अगरकर ने रेड-बॉल क्रिकेट के भविष्य को लेकर बड़ी तैयारी शुरू कर दी है। खबर आ रही है कि जून में अफगानिस्तान के खिलाफ होने वाले इकलौते टेस्ट मैच में अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को एक बार फिर नजरअंदाज किया जा सकता है।

टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार चयन समिति अब केवल नाम के आधार पर खिलाड़ियों को मौका देने के मूड में नहीं है। हालांकि यह मैच वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (WTC) का हिस्सा नहीं है, फिर भी सेलेक्टर्स इसे एक्सपेरिमेंटल मैच की तरह नहीं देख रहे हैं। इससे संकेत मिल रहा है कि शमी अब भविष्य की योजनाओं में शामिल नहीं हैं और चयन समिति का ध्यान नए तेज गेंदबाजों की तरफ है।

नए चेहरों पर है अगरकर की नजर

आकिब नबीः जम्मू-कश्मीर

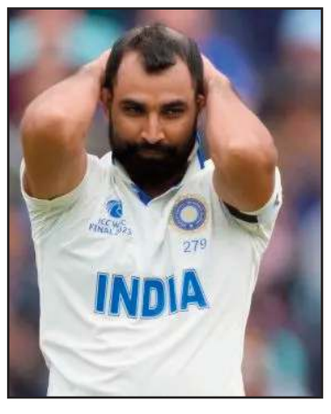

के इस गेंदबाज ने रणजी ट्रॉफी के पिछले सीजन में अपनी रफ्तार और स्विंग से सबको चौंकाया है। उनकी ऐतिहासिक सफलता ने उन्हें नेशनल टीम के दरवाजे पर लाकर खड़ा कर दिया है।

नितीश कुमार रेड्डीः भारत को लंबे समय से एक सीम-बॉलिंग ऑलराउंडर की तलाश है। टीम मैनेजमेंट उन्हें हार्दिक पांड्या के टेस्ट विकल्प के तौर पर देख सकता है।

अंशुल कंबोज और गुरनूर बरारः इंडिया-ए के लिए शानदार प्रदर्शन करने वाले इन दोनों गेंदबाजों को भी भविष्य की योजनाओं में शामिल किया गया है।

बुमराह और सिराज की भूमिका

IPL 2026 के तुरंत बाद होने वाले इस टेस्ट मैच के लिए जसप्रीत बुमराह को आराम दिया जा सकता है, ताकि उनके वर्कलोड को मैनेज किया जा सके। वहीं, मोहम्मद सिराज को उनकी बेहतरीन फिटनेस के कारण प्लेइंग इलेवन में जगह मिलना लगभग तय है। अब यह देखना दिलचस्प रहेगा कि नए नामों में कौन टीम इंडिया में शामिल होता है। सामने अफगानिस्तानी टीम है लेकिन भारतीय चयनकर्ता कोई जोखिम नहीं लेना चाहते। हालिया समय में टीम इंडिया का टेस्ट प्रदर्शन गिरता चला गया है।

नीट यूजी-2026 पेपर लीक मामले में सीबीआई की बड़ी कार्रवाई, 5 आरोपी गिरफ्तार, कई जगह छापेमारी

सीबीआई ने नीट यूजी-2026 परीक्षा में कथित अनियमितताओं और पेपर लीक मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है. इसके साथ ही देशभर में कई स्थानों पर छापेमारी भी की गई है. सीबीआई ने बताया कि शिक्षा मंत्रालय, उच्च शिक्षा विभाग से मिली लिखित शिकायत के आधार पर 12 मई 2026 को इस मामले में प्राथमिकी दर्ज की गई थी.

इस एफआईआर में आपराधिक साजिश, धोखाधड़ी, आपराधिक विश्वासघात और सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों की रोकथाम) अधिनियम 2024 सहित भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की संबंधित धाराएं शामिल हैं.

ये पांच आरोपी हुए गिरफ्तार

अब तक जांच एजेंसी ने जयपुर से तीन, गुरुग्राम से एक और नासिक से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है. गिरफ्तार किए गए आरोपियों में शुभम खैरनार (नासिक), मंगीलाल बिवाल (जयपुर), विकास बिवाल (जयपुर), दिनेश बिवाल (जयपुर) और यश यादव (गुरुग्राम) शामिल हैं.

सीबीआई ने बताया कि जांच के दौरान कई स्थानों पर छापेमारी की गई, जिसमें मोबाइल फोन सहित कई इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस और आपत्तिजनक सामग्री बरामद हुई है. एजेंसी राजस्थान एसओजी के साथ भी समन्वय में काम कर रही है, जिसने इस मामले की प्रारंभिक जांच की थी.

जांच एजेंसी के अनुसार, तकनीकी और फॉरेंसिक विश्लेषण के आधार पर आगे की कार्रवाई जारी है और अन्य संदिग्धों की भूमिका की भी जांच की जा रही है.

पेपर लीक के आरोपियों की फैमिली ट्री, जानिए कैसे रचा पूरा खेल

सूत्रों के अनुसार जांच एजेंसी की पड़ताल में सामने आया है कि मंगीलाल बिवाल और दिनेश सगे भाई हैं. वहीं विकास बिवाल, दिनेश बिवाल का बेटा है, जो नीट परीक्षा की तैयारी कर रहा है और सीकर में रहता है.

आरोप है कि दिनेश बिवाल (जिनका कथित रूप से भाजपा से जुड़ाव बताया जा रहा है, जिसकी जांच की जा रही है) ने 26-27 अप्रैल को करीब 30 लाख रुपये में प्रश्नपत्र खरीदा था.

बेटे के लिए प्रश्नपत्र खरीदा

यह भी दावा किया गया है कि यह प्रश्नपत्र उनके बेटे विकास के लिए खरीदा गया था, जो नीट की तैयारी कर रहा था. इसके बाद आरोप है कि उसी प्रश्नपत्र को सॉफ्ट कॉपी के रूप में सीकर में अन्य छात्रों को भी बेच दिया गया. जांच में यह भी सामने आया है कि पिछले कुछ वर्षों में इस परिवार के चार सदस्य नीट परीक्षा में चयनित हो चुके हैं. वहीं शुभम को पुणे से 'गेस पेपर' प्राप्त हुआ था, और गुरुग्राम निवासी यश यादव को शुभम के जरिए वही पेपर मिला था.

दो भाइयों ने 30 लाख रुपये में खरीदा पेपर

जांच एजेंसियों की पड़ताल में सामने आया है कि गुरुग्राम के एक डॉक्टर से जमवारामगढ़ के रहने वाले दो सगे भाई मंगीलाल बिवाल और दिनेश बिवाल ने कथित तौर पर 26 और 27 अप्रैल को करीब 30 लाख रुपये में नीट परीक्षा का पेपर हासिल किया था.

आरोप है कि इसके बाद दिनेश बिवाल ने वही प्रश्नपत्र अपने बेटे को दिया, जो सीकर में रहकर मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहा था. जांच में यह भी दावा किया गया है कि 29 अप्रैल को यही पेपर अन्य कई छात्रों और उनके अभिभावकों तक भी पहुंच गया.

पिछले वर्ष नीट परीक्षा में चयन हुआ था

पूछताछ में यह भी सामने आया है कि दिनेश बिवाल के परिवार के चार बच्चों का पिछले वर्ष नीट परीक्षा में चयन हुआ था. आरोपियों ने कथित रूप से बताया कि उन्हें लगभग एक महीने पहले ही इस बात की जानकारी मिल गई थी कि परीक्षा का पेपर लीक होकर उपलब्ध कराया जाएगा, जिसके आधार पर उन्होंने पहले से तैयारी कर ली थी.

700 छात्रों को पेपर पहुंचाया

इसी मामले में देहरादून से गिरफ्तार आरोपी राकेश कुमार मंडवारिया को लेकर भी अहम खुलासा हुआ है. एजेंसियों का कहना है कि राकेश ने करीब 700 छात्रों तक कथित रूप से यह पेपर पहुंचाया. बताया गया है कि प्रश्नपत्र पहले डिजिटल रूप में भेजा गया और बाद में उसकी प्रिंट कॉपी बनाकर भी बिक्री की गई. फिलहाल जांच एजेंसियां उन छात्रों और अभिभावकों की पहचान करने में जुटी हैं जिन्होंने कथित रूप से पैसे देकर पेपर हासिल किया था.

37 साल की फेमस एक्ट्रेस ने भारत छोड़ा, 16 साल बाद हुई ऐसी हालत, वीडियो में रोते हुए सामने रखा सच

(जीएनएस)। बॉलीवुड एक्ट्रेस मंदाना करीमी, जो 'बिग बॉस 9' और 'लॉकअप' जैसे शोज से अपनी पहचान बना चुकी हैं, ने 16 साल तक भारत में रहने के बाद देश छोड़ दिया है। ईरान मूल की 37 साल की एक्ट्रेस ने बेहद भावुक अंदाज में ये खबर शेयर की है और भारत को अपना 'दूसरा घर' बताया है। उनके लिए ये एक बेहद कठिन फैसला है।

मंदाना करीमी ने खामेनेई की मौत का जश्न मनाया था

मंदाना करीमी का ये कदम तब आया है, जब वह अमेरिका-ईरान युद्ध के दौरान अपनी बेबाक टिप्पणियों के चलते सुर्खियों में थीं। मार्च 2026 में अमेरिका और इजरायल के संयुक्त हमले के बाद उन्होंने ईरान के सुप्रीम लीडर अली खामेनेई की मौत का जश्न मनाया था। उनका दावा था कि खामेनेई ने ईरानी जनता को बहुत प्रताड़ित किया था।

मंदाना करीमी ने क्यों छोड़ा भारत?

-मंदाना करीमी ने अपने भारत छोड़ने की खबर इंस्टाग्राम पर एक फैन के सवाल का जवाब देते हुए दी। 'आस्क मी एनीथिंग' सेशन में फैन ने उनसे मुंबई छोड़ने के बारे में पूछा था। इसके जवाब में मंदाना करीमी ने एयरपोर्ट से एक इमोशनल वीडियो पोस्ट करते हुए कहा है- मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं ऐसा कह पाऊंगी लेकिन अलविदा भारत। ये मुश्किल होने वाला है।

-वीडियो में मंदाना करीमी ने आगे कहा- भारत में लगभग 16 साल बिताने के बाद, आखिरकार मैं अपने दूसरे घर को पीछे छोड़ रही हूं। अब एक नई शुरूआत की ओर बढ़ रही हूं। नया देश, नया घर, सब कुछ नया होगा। उन्होंने ये भी कहा कि जब तक वह पूरी तरह से बाहर नहीं निकल जातीं, तब तक ज्यादा जानकारी सोशल मीडिया पर शेयर नहीं कर सकतीं।

'भारत में मेरी लड़ाई कई साल से चल रही है'

-आपको बता दें कि इसी साल की शुरूआत में एनडीटीवी को दिए इंटरव्यू में मंदाना ने 'सुरक्षा कारणों' से भारत छोड़ने की योजना का जिक्र किया था। उन्होंने कहा था- मैं भारत छोड़ने पर विचार कर रही हूं, वो भी सुरक्षा कारणों से। भारत में ईरान का समर्थन करने का मेरा अपना तरीका है। सच्चाई के बारे में खुलकर बोलना, अधिकारियों की आलोचना करना और हार न मानना।

-मंदाना करीमी ने आगे बताया- इसके कई कारण हैं। भारत में मेरी लड़ाई कई साल से चल रही है और अब इसका कोई मतलब नहीं रह गया है। मंदाना ने भारत में समर्थन न मिलने पर निराशा भी व्यक्त की, जिससे उनके एक्टिविज्म का उनकी निजी जिंदगी पर गहरा असर पड़ा।

'मैं ईरान नहीं जा सकती, मुझ पर बैन लगा है'

-मंदाना करीमी ने कहा- न दोस्तों से, न सरकार से, न मीडिया से, अब यहां घर जैसा महसूस नहीं होता। ये मुश्किल रहा है लेकिन सब कुछ ईरान, जावेद शाह और मेरे लोगों के नाम है। मैं बिना किसी सहारे के भी ये दोबारा करूंगी।

-मार्च 2026 में मंदाना ने स्पष्ट किया था कि वह ईरान वापस नहीं जाएंगी क्योंकि एक दशक पहले ही उन पर वहां प्रतिबंध लग चुका है। उन्होंने कहा था- मुझ पर 10 साल पहले ईरान में बैन लगा दिया गया था। मैं ईरान वापस नहीं जा सकती। हां, मैं भारत छोड़ रही हूं, लेकिन मैं ईरान वापस नहीं जा रही हूं।"

-भारत में समर्थन की कमी पर नाराजगी जाहिर करते हुए उन्होंने कहा था- मुझे भारत में कोई सपोर्ट नहीं मिला। अचानक, जब खामेनेई की मौत हो गई, हर कोई सड़कों पर है और वो सच में खामेनेई के लिए शोक मना सकते हैं, जो मैं नहीं कर पाई और अब भी नहीं कर सकती।

मंदाना करीमी का करियर और परिवार

-आपको बता दें कि मंदाना करीमी को आखिरी बार साल 2022 की नेटफ्लिक्स फिल्म 'थार' में देखा गया था। एक्टिंग से ब्रेक लेने के बाद वह कंगना रनौत के रिएलिटी शो 'लॉक अप' (2022) में भी नजर आई थीं।

-मंदाना करीमी का जन्म 19 मई 1988 को ईरान के तेहरान में एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। उनके पिता ईरानी-भारतीय मूल के हैं और मां फारसी हैं। उनका बचपन तेहरान में बीता था।

एक इशारा और धरती खत्म! रूस ने तैयार किया दुनिया का सबसे खतरनाक मिसाइल

(जीएनएस)। रूस ने अपनी महाविनाशक मिसाइल 'सरमत' का सफल परीक्षण कर पूरी दुनिया को चौंका दिया है। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को इसकी जानकारी दे दी गई है। यह मिसाइल 35,000 किलोमीटर की अविश्वसनीय दूरी तक मार कर सकती है, जो इसे अब तक का सबसे शक्तिशाली हथियार बनाती है।

इसकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह पलक झपकते ही दुनिया के किसी भी कोने को निशाना बना सकती है। रूस का दावा है कि फिलहाल दुनिया में ऐसी कोई तकनीक नहीं है जो इस मिसाइल को रोक सके।

पूरे ग्रह का चक्कर लगाने की ताकत

सरमत मिसाइल की रेंज इतनी ज्यादा है कि यह हमला करने से पहले लगभग पूरी पृथ्वी का चक्कर लगा सकती है। आमतौर पर मिसाइलें सबसे छोटा रास्ता चुनती हैं, लेकिन सरमत दक्षिणी या उत्तरी ध्रुव, किसी भी रास्ते से जा सकती है। इससे दुश्मन देशों के रडार और डिफेंस सिस्टम के लिए इसके रास्ते का अंदाजा लगाना नामुमकिन हो जाता है। यह मिसाइल 25,000 किमी प्रति घंटे की रफ़्तार से उड़कर तबाही मचाने में सक्षम है।

अमेरिका और चीन से कहीं आगे

अगर तुलना करें, तो दुनिया की अन्य बड़ी महाशक्तियों की मिसाइलें सरमत के सामने फीकी नजर आती हैं। चीन की सबसे ताकतवर मिसाइल DF-41 की रेंज 15,000 किमी तक है, जबकि अमेरिका की 'मिनटमैन-III' लगभग 13,000 किमी तक ही जा सकती है। रूस की सरमत इनसे दोगुने से भी ज्यादा दूरी तय कर सकती है। इसकी मारक क्षमता पश्चिमी देशों के किसी भी मौजूदा मिसाइल सिस्टम के मुकाबले चार गुना से भी अधिक बताई जा रही है।

एक साथ 15 परमाणु बम ले जाने में सक्षम

सरमत सिर्फ एक मिसाइल नहीं, बल्कि विनाश का एक पूरा पैकेज है। यह अपने साथ एक बार में 10 से 15 भारी परमाणु हथियार (वॉरहेड्स) ले जा सकती है। इसका मतलब है कि एक ही मिसाइल कई अलग-अलग शहरों को एक साथ निशाना बना सकती है। इसे जमीन के नीचे बने बेहद सुरक्षित बंकरों से लॉन्च किया जाता है, जिससे युद्ध की स्थिति में इसे नष्ट करना दुश्मन के लिए लगभग असंभव हो जाता है।

पुतिन की तैयारी और अमेरिका को जवाब

पुतिन ने इस सफलता पर कहा कि रूस ने यह सिस्टम मजबूरी में बनाया है। साल 2002 में जब अमेरिका मिसाइल संधि से पीछे हटा, तब रूस ने अपनी सुरक्षा के लिए एडवांस सिस्टम बनाना शुरू किया। पुतिन का मानना है कि सरमत के आने के बाद अब रूस की सुरक्षा अभेद्य हो गई है। यह मिसाइल न केवल आज के बल्कि भविष्य के भी किसी भी मिसाइल डिफेंस सिस्टम को आसानी से भेदने की ताकत रखती है।

सरकार ने कोयला और लिग्नाइट गैसीकरण परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए 37,500 करोड़ रुपये की योजना को मंजूरी दी

नयी दिल्ली, सरकार ने सतही कोयला और लिग्नाइट गैसीकरण परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए 37,500 करोड़ रुपये की बड़ी योजना को मंजूरी दे दी है।

केन्द्रीय सूचना प्रसारण मंत्री अश्वनी वैष्णव ने बुधवार को बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने सतही कोयला और लिग्नाइट गैसीकरण परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए 37,500 करोड़ रुपये की बड़ी योजना को मंजूरी दे दी है। सरकार का कहना है कि यह योजना वर्ष 2030 तक 10 करोड़ टन कोयला गैसीकरण के राष्ट्रीय लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगी। उन्होंने कहा कि इस योजना का उद्देश्य देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करना और एलएनजी, यूरिया, अमोनिया तथा मेथेनॉल जैसे महत्वपूर्ण उत्पादों के आयात पर निर्भरता कम करना है। वर्तमान में भारत अपनी जरूरत का 50 प्रतिशत से अधिक एलएनजी, लगभग 20 प्रतिशत यूरिया, करीब 100 प्रतिशत अमोनिया और 80 से 90 प्रतिशत मेथेनॉल आयात करता है। योजना के तहत लगभग 7.5 करोड़ टन कोयला और लिग्नाइट गैसीकरण क्षमता विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है।

यूपी के लखनऊ में लगी 'साइबर पंचायत' ग्रामीण भारत को डिजिटल रूप से सुरक्षित बनाने की पहल

लखनऊ के सरोजिनी नगर स्थित प्राथमिक विद्यालय हसनपुर खेवली में PsyNaree वेलफेयर फाउंडेशन और आरटी साइबर अकेडमी ने 'साइबर पंचायत' का आयोजन किया.

(जीएनएस)। सरोजनीनगर, लखनऊ, ग्रामीण क्षेत्रों में साइबर सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से ढ२८ठंश्री वेलफेयर फाउंडेशन और आरटी साइबर अकेडमी ने मिलकर 'साइबर पंचायत' पहल की शुरूआत की है. यह एक ऐसा सामुदायिक मॉडल है, जिसका उद्देश्य साइबर सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य की जागरूकता को सीधे ग्रामीण और जमीनी स्तर तक पहुँचाना है, ताकि भौगोलिक, भाषाई और पहुँच से जुड़ी बाधाओं को तोड़ा जा सके.

इसी कड़ी में प्राथमिक विद्यालय हसनपुर खेवली, सरोजिनी नगर, लखनऊ में साइबर पंचायत कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण समुदायों और नागरिकों को साइबर सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य जैसे आज के डिजिटल युग के दो महत्वपूर्ण विषयों के प्रति जागरूक किया गया. आयोजकों ने कहा कि डिजिटल साक्षरता और मानसिक स्वास्थ्य केवल शहरी भारत तक सीमित नहीं रहने चाहिए, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों तक भी इसकी पहुँच सुनिश्चित होनी चाहिए.

कार्यक्रम में देश के जाने-माने साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ फॅ३ॅ३ ळल्लङ्क्लिल ने लोगों को साइबर

अपराध, ऑनलाइन धोखाधड़ी, फर्जी कॉल, डळढ स्कैम और सोशल मीडिया के दुरुपयोग से उत्पन्न खतरों के बारे में जागरूक किया. उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से बढ़ रही मूल बैंक अकाउंट की समस्या पर भी चिंता जताई.

जागरूकता ही साइबर अपराध से बचाव की सबसे बड़ी ढाल

उन्होंने बताया कि साइबर ठग ग्रामीणों को थोड़े से पैसों का लालच देकर उनके बैंक खाते, सिम कार्ड और ड उ दस्तावेज हासिल कर लेते हैं और बाद में इनका इस्तेमाल साइबर अपराध से जुड़े पैसों के लेनदेन में किया जाता है. ऐसे कई ग्रामीण कानूनी जानकारी के अभाव में अनजाने में साइबर अपराध का हिस्सा बन जाते हैं और बाद में पुलिस कार्रवाई, खाता फ्रीज और गिरफ़्तारी जैसी समस्याओं का सामना करते हैं. उन्होंने कहा कि सतर्कता और जागरूकता ही साइबर अपराध से बचाव की सबसे बड़ी ढाल है.

कार्यक्रम के दौरान टीम ढ२८ठंश्री की मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ आर्ची अनुराज ने डिजिटल निर्भरता और अत्यधिक स्क्रीन टाइम के कारण बढ़ रहे मानसिक स्वास्थ्य संकट पर प्रकाश डाला. उन्होंने बताया कि तनाव, चिंता, अकेलापन और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएं विशेष रूप से बच्चों और युवाओं में तेजी से बढ़ रही हैं. उन्होंने भावनात्मक स्वास्थ्य, खुले संवाद और सामुदायिक सहयोग को स्वस्थ और सशक्त समाज की नींव बताया.

सत्र के दौरान साइबर सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित लघु फिल्म भी दिखाई गई. कार्यक्रम का संचालन अमोलिका ने किया. इस आयोजन में स्वयंसेवकों अयेशा, अंशिका, श्रेया, संध्या, अग्रिमा, दया शंकर, लभांश, श्रेयांश और सुहित ने उत्साह और समर्पण के साथ भाग लिया. आयोजकों ने कहा कि इन स्वयंसेवकों की मेहनत और लगन ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई.

साइबर सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य एक ही सिक्के के दो पहलू

वक्ताओं ने एकमत होकर कहा कि साइबर सुरक्षा और मानसिक स्वास्थ्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. उनका कहना था कि डिजिटल दुनिया के मनोवैज्ञानिक प्रभाव को समझे बिना ऑनलाइन सुरक्षा अधूरी है और एक सशक्त नागरिक वही है, जो डिजिटल रूप से सुरक्षित होने के साथ मानसिक रूप से भी मजबूत हो.

कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों ने सुरक्षित डिजिटल आदतें अपनाने और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाने का संकल्प लिया. आयोजकों ने बताया कि इससे पहले अप्रैल माह में सरोजिनी नगर के पिपरसंड गांव में भी साइबर पंचायत का सफल आयोजन किया गया था. उन्होंने कहा कि यह पहल डिजिटल रूप से सुरक्षित और मानसिक रूप से सशक्त ग्रामीण भारत के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है.

नेपालः बढ़ता चीनी प्रभाव! बालेन शाह के फैसले से भारत की बढ़ सकती है टेंशन

(जीएनएस)। नेपाल की राजनीति में मचे उथल-पुथल के बीच प्रधानमंत्री बालेन शाह ने 'चीन कार्ड' खेलकर दक्षिण एशिया की भू-राजनीति में नई हलचल पैदा कर दी है। काठमांडू में जून के पहले सप्ताह में होने वाली उच्च स्तरीय बैठक यह संकेत दे रही है कि नेपाल अब भारत पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए बीजिंग के साथ ठप पड़ी परियोजनाओं, विशेषकर बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (इफ्क) के तहत बुनियादी ढांचों को रफ्तार देने के मूड में है।

विशेषज्ञ इसे बालेन शाह की एक सोची-समझी कूटनीतिक चाल मान रहे हैं। एक ओर जहां वे चीन से भारी निवेश और कनेक्टिविटी की उम्मीद कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर इसे भारत से बेहतर सौदेबाजी करने और क्षेत्रीय संतुलन बनाने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है।

क्या है मामला?

नेपाल और चीन के बीच जून के पहले सप्ताह (प्रस्तावित 2 जून) में एक महत्वपूर्ण बैठक होने वाली है। इसका मुख्य उद्देश्य नेपाल में चीनी निवेश वाली उन 20 से अधिक परियोजनाओं की बाधाओं को दूर करना है जो लंबे समय से अटकी हुई हैं। इसमें रेलवे, ट्रांसमिशन लाइन और सड़क निर्माण जैसे प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। नेपाली विदेश मंत्रालय ने विभिन्न

विभागों से इन परियोजनाओं की वर्तमान स्थिति और समस्याओं पर रिपोर्ट मांगी है ताकि द्विपक्षीय बातचीत में ठोस समाधान निकाला जा सके।

चीन से बढ़ती करीबी

हाल के महीनों में नेपाल और चीन के बीच कूटनीतिक सक्रियता 'ताबड़तोड़' बढ़ी है। प्रधानमंत्री बालेन शाह की सरकार चीन के साथ इफ्क के तहत 10 प्रमुख परियोजनाओं को लागू करने पर जोर दे रही है। इसमें केरुंग-काठमांडू सीमा-पार रेलवे और रिंग रोड सुधार जैसे बड़े बुनियादी ढांचे शामिल हैं। नेपाल का झुकाव चीन की ओर बढ़ने का एक बड़ा कारण वहां से मिलने वाला अनुदान और बिना ब्याज वाला कर्ज है, जिसे बालेन शाह अपनी विकासवादी छवि को चमकाने के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं।

भारत के लिए क्या है खतरा?

नेपाल की चीन से यह 'इश्कबाजी' भारत के लिए रणनीतिक और सुरक्षा की दृष्टि से चिंता का विषय है।

सुरक्षा चिंताएंः हिमालयी क्षेत्र में चीनी रेलवे और सड़कों का जाल बिछने से भारतीय सीमा के करीब चीन की पहुंच आसान हो जाएगी।

रणनीतिक दबावः विशेषज्ञ मानते हैं कि नेपाल अक्सर 'चीन कार्ड' का इस्तेमाल भारत पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने के लिए करता है ताकि भारत से अधिक आर्थिक और राजनीतिक रियायतें ले सके।

क्षेत्रीय प्रभावः यदि नेपाल पूरी तरह चीन के प्रभाव में आता है, तो दक्षिण एशिया में भारत की पारंपरिक 'बड़े भाई' वाली भूमिका को चुनौती मिल सकती है।

कर्ज के जाल का डर

नेपाल के भीतर और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यह बड़ा सवाल है कि क्या नेपाल चीन के 'सफेद हाथी' बन चुके प्रोजेक्ट्स का बोझ उठा पाएगा? श्रीलंका के हंबनटोटा बंदरगाह और पाकिस्तान की बदहाली का उदाहरण सामने है। नेपाल का पोखरा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पहले से ही अपनी ऑपरेशनल लागत नहीं निकाल पा रहा है। अगर बालेन शाह ने बहुत सख्त शर्तों पर चीनी कर्ज लिया, तो भविष्य में नेपाल की संप्रभुता के लिए खतरा पैदा हो सकता है और वह कर्ज चुकाने के बदले अपनी जमीन चीन को सौंपने पर मजबूर हो सकता है।

नेपाल जाने के लिए अब पासपोर्ट है जरूरी? वायरल दावे बालेन सरकार ने क्या कहा

(जीएनएस)। नेपाल पर्यटन बोर्ड ने उन खबरों का पूरी तरह खंडन किया है जिनमें दावा किया गया था कि भारतीय नागरिकों के लिए नेपाल प्रवेश के नियमों में बदलाव किया गया है। बोर्ड ने साफ किया कि जोगबनी सीमा या अन्य रास्तों से आने वाले भारतीयों के लिए किसी भी तरह की नई पाबंदी या आईडी कार्ड की अनिवार्य जांच शुरू नहीं की गई है।

सोशल मीडिया और कुछ मीडिया पोर्टल्स पर चल रही ये खबरें कि अवैध घुसपैठ रोकने के लिए सख्ती की गई है, पूरी तरह निराधार हैं। नेपाल सरकार ने स्पष्ट किया है कि दोनों देशों के बीच खुली सीमा की पुरानी व्यवस्था पहले की तरह ही जारी है।

भ्रामक खबरों का सच

नेपाल पर्यटन बोर्ड के अनुसार, भारतीय पर्यटकों के लिए यात्रा नियमों में बदलाव की खबरें तथ्यों से परे हैं। बोर्ड ने उन दावों को गलत बताया है जिनमें कहा गया था कि नेपाल में भारतीयों के रुकने की अवधि 30 दिन तक सीमित कर दी गई है या ज्यादा समय रुकने पर गाड़ियां जब्त की जाएंगी। सरकार का कहना है कि भारत और नेपाल के बीच जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध हैं, उनमें कोई कड़वाहट नहीं आई है और न ही नियमों को सख्त किया गया है।

सीमा पर सुरक्षा का दावा

पिछले दिनों नेपाली मीडिया में मोरंग के अधिकारियों के हवाले से खबरें आई थीं कि पश्चिम बंगाल चुनाव के बाद सुरक्षा कारणों से सीमा पर जांच बढ़ा दी गई है। हालांकि, अब आधिकारिक बयान में कहा गया है कि द्विपक्षीय समझौतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। नेपाल सरकार ने स्पष्ट किया है कि सीमा पर किसी भी तरह की 'नई' पाबंदी नहीं लगाई गई है, जो भारतीय पर्यटकों की सुगम यात्रा में बाधा बने। खुली सीमा की व्यवस्था वैसी ही बनी हुई है।

ऑनलाइन परमिट की नई सुविधा

पर्यटन विभाग ने बताया कि असल में नियमों को सख्त नहीं, बल्कि आसान बनाया गया है। नेपाल सरकार ने एक नई डिजिटल प्रणाली शुरू की है जिससे अपनी गाड़ी से नेपाल जाने वाले भारतीय पर्यटक अपना प्रवेश परमिट और शुल्क ऑनलाइन जमा कर सकते हैं। इस पहल का उद्देश्य सीमा चौकियों पर होने वाली भीड़भाड़ और असुविधा को कम करना है, ताकि सैलानी बिना किसी परेशानी के नेपाल की यात्रा का आनंद ले सकें और कागजी कार्यवाही में समय न बीते।

क्या आईडी कार्ड जरूरी है?

नियमों के अनुसार, यदि कोई भारतीय नागरिक हवाई जहाज से नेपाल जाता है, तो उसे अपनी पहचान साबित करने के लिए पासपोर्ट या वोटर आईडी कार्ड दिखाना जरूरी होता है। हवाई यात्रा के दौरान आधार कार्ड या ड्राइविंग लाइसेंस मान्य नहीं होते हैं। वहीं, सड़क मार्ग से जाने वाले पर्यटकों के लिए सामान्य पहचान की जरूरत होती है, लेकिन पर्यटन बोर्ड ने साफ किया है कि अचानक से कोई 'अनिवार्य' नया आईडी नियम लागू नहीं किया गया है जो पहले से अलग हो।

नेपाल सरकार का आधिकारिक स्वागत

नेपाल के विदेश मंत्रालय ने भारतीय पर्यटकों का स्वागत करते हुए कहा है कि नेपाल आज भी भारतीयों के लिए 'बिना वीजा' और 'बिना परेशानी' वाला देश है। बयान में कहा गया है कि भारतीय अपनी कार से या हवाई मार्ग से कभी भी नेपाल आ सकते हैं। सरकार ने लोगों से अपील की है कि वे सोशल मीडिया पर चल रही भ्रामक जानकारियों पर भरोसा न करें। नेपाल और भारत के बीच पर्यटन सहयोग पहले की तरह ही मजबूत है और भारतीय मेहमानों का वहां हमेशा स्वागत है।